वर्ष 26 । अंक 5 । दिसम्बर 2024

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट - 2024

सूरत में आयोजित हुई राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएँ

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा नई पीढ़ी में रचनात्मकता व सकारात्मकता के गुणों को पोषित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तर पर अणुव्रत क्रिएटिविटी प्रकल्प का आयोजन प्रतिवर्ष किया जा रहा है। इस वर्ष 'व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र निर्माण' की मुख्य थीम पर लेखन, चित्रकला, गायन (एकल एवं समूह), भाषण व कविता – इन छह विधाओं में कक्षा 5 से 8 व कक्षा 9 से 12 दो वर्गों में प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। अणुव्रत अनुशास्ता की सन्निधि में 5 –6 नवंबर को सूरत में राष्ट्रीय प्रतियोगिता का आयोजन हुआ एवं राष्ट्रीय स्तर पर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

गायन (एकल)

स्तर-1 (कक्षा 5-8) **प्रथम** –प्रियांसी, सेंट्रल पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, उदयपुर (राजस्थान) **द्वितीय**–विहान राम, आर्य गुरुकुल नंदिवली, कल्याण(महाराष्ट्र) **तृतीय**– आरव विभूते, प्लैटिनम वैली इंटरनेशनल स्कूल, गाजियाबाद(उत्तर प्रदेश)

स्तर -2 कक्षा 9-12 **प्रथम** – शीरीन कुरेशी, अजीज पब्लिक स्कूल, इंदमारा(छत्तीसगढ़) **द्वितीय** – सोनल, प्लैटिनम वैली इंटरनेशनल स्कूल, गाजियाबाद(उत्तर प्रदेश) **तृतीय**– नवृति वैद, अल्पाइन पब्लिक स्कूल, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

शेष परिणाम पृष्ठ 51..

विद्यार्थी अणुव्रत

1. मैं परीक्षा में अवैध उपायों का सहारा नहीं लूंगा।
2. मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।
3. मैं अश्लील शब्दों का प्रयोग नहीं करूंगा, अश्लील साहित्य नहीं पढ़ूंगा तथा अश्लील चलचित्र नहीं देखूंगा।
4. मैं मादक तथा नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा।
5. मैं चुनाव के सम्बन्ध में अनैतिक आचरण नहीं करूंगा।
6. मैं दहेज से अनुबंधित एवं प्रदर्शन से युक्त विवाह नहीं करूंगा और न भाग लूंगा।
7. मैं बड़े वृक्ष नहीं काटूंगा और प्रदूषण नहीं फैलाऊंगा।

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

www.anuvibha.org

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 26 अंक : 5 दिसम्बर, 2024

सम्पादक : संचय जैन
सह सम्पादक : प्रकाश तातेड़
कार्यालय प्रभारी : चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक्स : गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन : दिलीप शर्मा

अध्यक्ष : प्रताप सिंह दुगड़
महामन्त्री : मनोज सिंघवी
कोषाध्यक्ष : राकेश बरड़िया
प्रबन्ध सम्पादक : निर्मल राँका, पंचशील जैन

प्रकाशक :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
www.anuvibha.org
9414343100, 9351552651

सहयोगी संस्थान :
भागीरथी सेवा प्रन्यास, जयपुर

- 'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है।
- लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है।
- समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित।

अणुविभा के आगामी दो वर्षीय कार्यकाल के लिए अणुव्रत के वरिष्ठ कार्यकर्ता प्रतापसिंह दुगड़ का अध्यक्ष पद हेतु निर्वाचन हुआ है। श्री दुगड़ लगभग दो दशक से अणुव्रत आंदोलन में सक्रिय रहे हैं। सरलता, मिलनसारिता और कर्मठता आपके व्यक्ति त्व की विशेषता है। आपके सक्षम नेतृत्व में अणुविभा और 'बच्चों का देश' प्रकाशन अवश्य ही नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेंगे, शुभेच्छा।

कविता

08 **छोटी एक दुकान**
रेखा लोढ़ा 'स्मित'

10 **बचपन**
भूपसिंह भारती

10 **मोबाइल पाकर**
डॉ. मृदुल शर्मा

18 **कैसे नाक निचोड़ें जी**
प्रभुदयाल श्रीवास्तव

18 **जबरा**
शादाब आलम

27 **ऐसा क्रिसमस का त्योहार**
श्याम पलट पांडेय

29 **पत्रिका है बच्चों का देश**
डॉ. आर.पी सारस्वत

30 **रखो साफ–सफाई**
नमिता वैश्य

स्तम्भ

06 सम्पादक की पाती
07 महाप्रज्ञ की कथाएँ
28 परख
30 प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये
32 आओ पढ़ें : नई किताबें
32 सुडोकू
33 व्हाट्सएप कहानी
37 दस सवाल : दस जवाब
41 पढ़ो और जीतो, उत्तरमाला
42 कलम और कूँची
44 नन्हा अखबार
46 Science of Living : Jeevan Vigyan
49 जन्मदिन की बधाई

आलेख

08 राज्य पक्षी–16 : श्वेतग्रीवा किलकिला
डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी
09 सुन ली पुकार
रजनीकान्त शुक्ल
11 रतन टाटा
सुशीला शर्मा
26 आओ जाने... क्रिसमस
डॉ. अलका जैन 'आराधना'
34 जो जीते हैं जमाने के लिए
शिखर चन्द जैन
38 पालक खाएँ सेहत बनाएँ

कहानी

15 हैप्पी क्रिसमस
अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'
19 गोल–गोल रोटी
ताराचंद मकसाने
23 मेहनत का मोल
पूरन सरमा
31 मुस्कान की बोहनी
श्यामल बिहारी महतो
35 कहाँ गया धन
पुष्पेश कुमार पुष्प
39 रेड बैंच
डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'

विविधा

16 अंक मिलाओ
चाँद मोहम्मद घोसी
14 विस्मयकारी भारत–21
रवि लायटू
17 वर्ग पहेली
राधा पालीवाल
22 अणुव्रत की बात
मनोज त्रिवेदी
13 दिमागी कसरत
प्रकाश तातेड़
36 बूझो तो जानें
प्रेमसिंह राजावत 'प्रेम'
48 चित्रकथा
संकेत गोस्वामी
49 किड्स कार्नर
वेणु वरियाथ

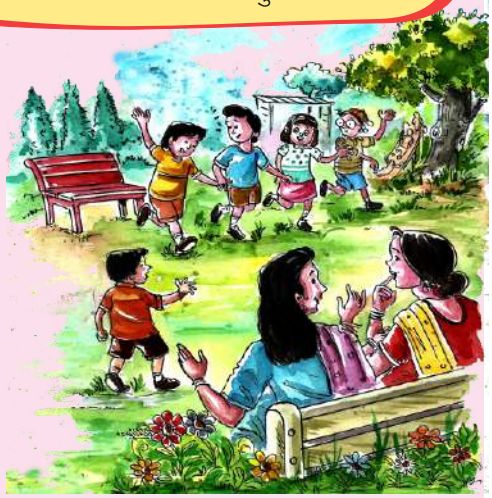

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

क्रिसमस की छुट्टियाँ थीं। जॉन अपने मम्मी–पापा और दादा के साथ छुट्टियाँ मनाने गोआ में था। समुद्र के किनारे दूर–दूर तक फैली रेत में खेलने में उसे बड़ा मजा आ रहा था। समुद्र की लहरों का पानी जब उसके पैरों को छू कर लौटता तो उसके शरीर में मानो सिहरन सी दौड़ जाती। जॉन के दादा पानी की पहुँच से थोड़ा दूर रेत पर बैठे दूर क्षितिज को देख रहे थे जहाँ समुद्र और आसमान मानो आपस में मिल कर एक हो गए हों।

जॉन जब खेलते–खेलते थक गया तो दादा के पास आकर बैठ गया। दोनों के बीच अच्छी पटती थी। जॉन ने दादा को छेड़ते हुए पूछा– "क्यों ग्रैंडपा, पानी से डर लगता है? इसीलिए इतना दूर आकर बैठे हो?"

दादा खिलखिला कर हँस पड़े, बोले– "नहीं रे जॉन! लेकिन हाँ, बचपन में मुझे बहुत डराया जाता था। मैं जब मॉम–डैड का कहना नहीं मानता था तो मुझे भूत, चुड़ैल, शेर, पुलिस, हाबू... पता नहीं किस–किस का डर दिखाया जाता था और डर के मारे मैं नहीं चाहते हुए भी सब काम कर देता।"

जॉन बोला– "मुझे भी डैड कभी–कभी डराते हैं और मॉम, वो तो चॉकलेट का लालच दे कर भी मुझे मना लेती है।"

दादाजी गम्भीर हो गए– "मैंने कितनी बार तुम्हारे मॉम–डैड को समझाया है कि बचपन में हमारे मन में यदि डर और लालच बैठ गया तो जिन्दगी भर यह हमारा पीछा नहीं छोड़ता। यह हमें आगे बढ़ने से रोकता है।"

"वो कैसे ग्रैंडपा?" –जॉन सोच में पड़ गया।

दादाजी बोले– "बेटा, तब हम कोई काम या तो इसलिए करते हैं कि नहीं करने से हमें किसी अनहोनी का डर लगता है और या इसलिए करते हैं कि वो करने से हमें कोई इनाम मिलेगा। गुण–दोष के आधार पर कोई काम करना हमारा स्वभाव नहीं बन पाता। हम दूसरों की कठपुतली बने रहते हैं और अपने विवेक से काम नहीं कर पाते।"

"तब तो डर और लालच दोनों ही बहुत बुरे होते हैं ग्रैंडपा! आप मॉम–डैड को समझाते क्यों नहीं?"

"बहुत बार समझाया है बेटा। अब तुमको भी तो ध्यान रखना पड़ेगा कि ऐसी नौबत ही न आने दो कि उन्हें कोई झूठा डर दिखाना पड़े या लालच देना पड़े।"

जॉन को दादाजी की बात समझ में आ रही थी। तभी दूर से एक बड़ी लहर आती देख वह उठा, कुछ ही दूर बैठे मम्मी–पापा को हाथ पकड़ कर उठाया और लहर की ओर दौड़ पड़ा– "चलो मॉम–डैड, इस लहर में भीगते हैं।" दादाजी मन ही मन मुस्कुरा कर सोच रहे थे – "डर के आगे जीत है"।

बच्चो, हमें हर दिन किसी न किसी डर या लालच से दो–चार होना पड़ता है। कुछ भी करने से पहले सोचो कि आप वह काम किसी डर के कारण कर रहे हो, कोई लालच आपको वह काम करने के लिए प्रेरित कर रहा है या आप इसलिए वह काम कर रहे हो क्योंकि वह काम करना आवश्यक है, महत्त्वपूर्ण है। डर और लालच से जितना बच सको उतना ही यह आपके सफल और उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा होगा।

आपका ही,
संचय

फिर कहीं चले जाओ

एक कौआ तेजी से उड़ता हुआ चला जा रहा था। पेड़ पर कोयल बैठी थी। उसने पूछा– "भैया! आज इतने उतावले क्यों हो रहे हो? क्या बात है?" कौआ बोला– "बहन! क्या कहूँ, जहाँ भी जाता हूँ दुत्कार मिलती है, उड़ा दिया जाता हूँ। कहीं सत्कार नहीं मिलता। यहाँ मेरा कोई आदर नहीं करता। इसलिए मैं इस देश को छोड़कर, विदेश जा रहा हूँ। वहाँ मैं अपरिचित रहूँगा। सब मेरा सम्मान करेंगे।"

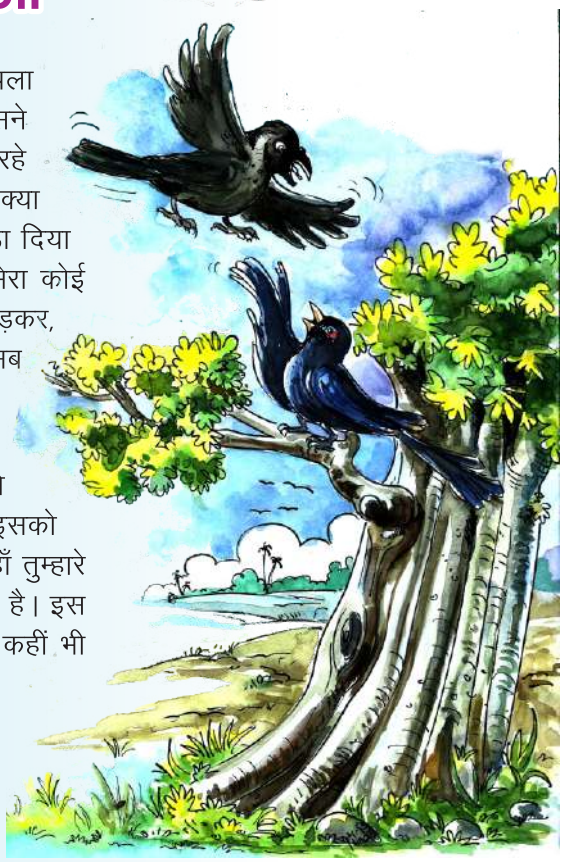

कोयल ने कहा– "भैया! बात तो ठीक है, पर विदेश जाते हो तो अपनी बोली तो बदलते जाना। काँव–काँव को बदल देना। इसको बदले बिना वहाँ भी सम्मान नहीं मिलेगा। यहाँ तुम्हारे प्रति जो घृणा है, वह इस वाणी के कारण ही है। इस कर्कश और रूखी ध्वनि को बदल दो, फिर कहीं भी चले जाओ, सर्वत्र सम्मान होगा।"

कथाबोध : सम्मान, व्यक्ति का नहीं होता। सम्मान, उसके व्यवहार और वाणी का होता है अतः व्यवहार को अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिये।

अणुविभा

अहिंसक-नैतिक चेतना का प्रबल प्रतिनिधि
अणुव्रत

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

सदस्यता फॉर्म

मैं 'अणुव्रत'/'बच्चों का देश' पत्रिका का सदस्यता शुल्क नीचे दिए विवरण के अनुसार जमा करा रहा/रही हूँ -

अवधि	'अणुव्रत'	'अणुव्रत' पत्रिका हेतु बैंक विवरण	'बच्चों का देश'	'बच्चों का देश' हेतु बैंक विवरण
1 वर्ष	₹ 750	ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY CANARA BANK DDU MARG, NEW DELHI A/c No. : 0158101120312 IFSC Code : CNRB0000158	₹ 350	ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY IDBI BANK Branch Rajsamand A/c No. : 1041040000046914 IFSC Code : IBKL0000104
3 वर्ष	₹ 1800		₹ 900	
5 वर्ष	₹ 3000		₹ 1500	
10 वर्ष	₹ 6000		₹ 3000	
15 वर्ष (योगक्षेमी)	₹ 15000		₹ 7500	

नाम .....

पता .....

..... पिन

मोबाइल ..... ईमेल .....

यह फॉर्म मय सदस्यता शुल्क किसी एक पते पर भेजें -

'बच्चों का देश' पत्रिका
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स' पीस पैलेस, बॉक्स सं. 28, राजसमन्द - 313324 (राजस्थान)
मोबाइल : 9414343100
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in

'अणुव्रत' पत्रिका
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002
मोबाइल : 9116634512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

अँग्रेजी नाम : White-throated Kingfisher
वैज्ञानिक नाम - Halcyon smyrnensis

पश्चिमी बंगाल का राज्य पक्षी

श्वेतग्रीवा किलकिला

यह भारत के अधिकांश भागों में मिलता है। यह ताजे पानी की नदियों, नहरों, झीलों, तालाबों तथा अन्य जलस्रोतों के किनारे पेड़ों व अन्य स्थानों पर देखने को मिलता है। इसे खुले जंगलों, खेतों, बाग–बगीचों, पार्कों में भी देखा जा सकता है। मध्यम आकार के इस पक्षी की लम्बाई 26–28 सेन्टीमीटर तक हो सकती है। यह लाल, कत्थई, फिरोजी और सफेद रंगवाला एक बड़ा किलकिला है। इसका सिर सहित शरीर का अधिकांश भाग फिरोजी और कत्थई तथा गले एवं छाती वाला भाग सफेद होता है। इसके उड़ने वाले पंख चौड़े, कत्थई एवं काले होते हैं। इसके पंखों पर सफेद रंग के धब्बे होते हैं जो उड़ते समय साफ दिखाई देते हैं। लाल पैरों वाले श्वेतग्रीवा किलकिले की लाल चोंच इसके सिर से भी बड़ी और शक्तिशाली होती है।

डॉ. कैलाश चन्द सैनी
जयपुर (राजस्थान)

पद्य कथा

छोटी एक दुकान

विद्यालय के सामने, छोटी एक दुकान।
चूरण टॉफी गोलियाँ, मैदे के पकवान।।

बच्चे खाते शौक से, रुपये करते खर्च।
लेकिन बिट्टू ने किया, गूगल पर यह सर्च।
मैदा खाने के बड़े, होते हैं नुकसान।।
विद्यालय के सामने, छोटी एक दुकान।।

टॉफी करती दाँत का, ऐसा सत्यानाश।
मीठी गोली से बढ़े, खाँसी और खराश।।
पढ़कर सारी बात को, बिट्टू है हैरान।
विद्यालय के सामने, छोटी एक दुकान।।

उसने मम्मी से कहा, कैसे करें उपाय।
बूढ़ी दादी की कभी, बन्द नहीं हो आय।।
बिट्टू, मम्मी को मिला, ऐसा एक निदान।
विद्यालय के सामने, छोटी एक दुकान।।

मम्मी दादी से मिली, दे दी सुन्दर राय।
ताजे फल तुम बेचना, दुगुनी होगी आय।।
बच्चों की सेहत बने, बेचो वह सामान।
विद्यालय के सामने, छोटी एक दुकान।।

रेखा लोढ़ा 'स्मित'
भीलवाड़ा (राजस्थान)

सुन ली पुकार

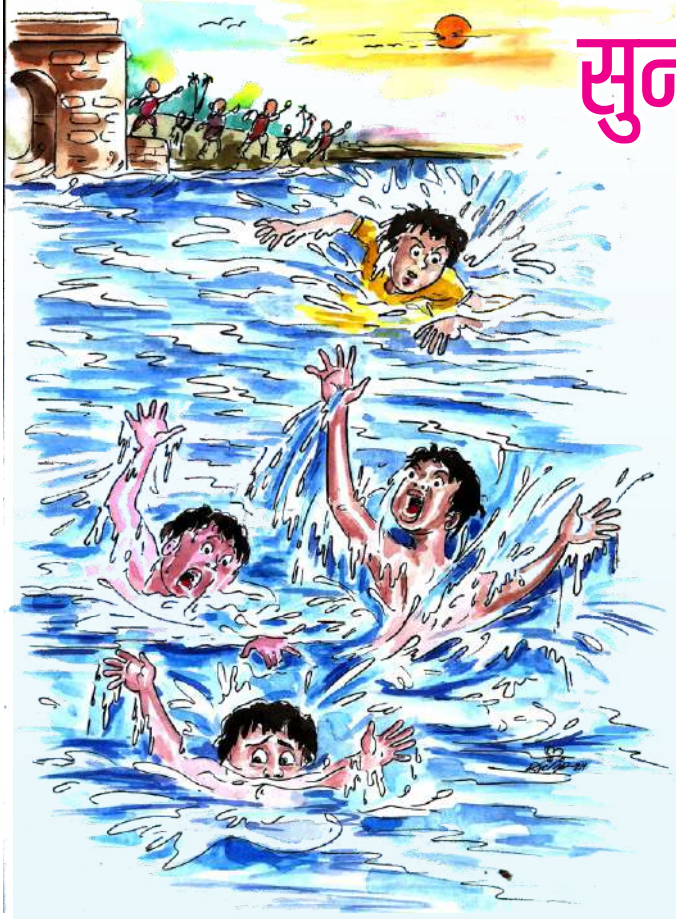

गुजरात राज्य के सुरेन्द्र नगर से होकर मच्छू नदी गुजरती है। इसकी कुल लम्बाई एक सौ तीस किलोमीटर है। इसका मुहाना अरब सागर में जाकर खुलता है। इस नदी पर बने चैक डैम की ओर तीन लड़के चले जा रहे थे। उन तीनों ने साथ मिलकर वहाँ जाकर नहाने का इरादा किया था। उनमें जारू बवकूभाई पटगिर बारह साल का, दूसरा जयराज गोडाड भाई जालू तेरह साल का और तीसरा नागराज धीरूभाई भगत दस साल का था। गर्मी से राहत पाने के लिए उन्हें पानी में नहाने का यह तरीका अच्छा लगा।

वे पहले भी वहाँ आ चुके थे। अन्य लोग भी वहाँ नहाने और कपड़े धोने के लिए आते रहते थे। उस समय भी वे वहाँ पर अकेले नहीं थे। कुछ और लोग भी थे जो वहाँ नहा रहे थे। पर वे उस जगह से दूर थे जहाँ पर ये तीनों नहाने के लिए उतर रहे थे। उन्हें क्या पता था कि उनका आज का यह नहाना कितना खतरनाक होने जा रहा था। वे तो बस गर्मी से राहत पाने के लिए सिर्फ कुछ देर के लिए पानी में रहना चाहते थे। नहाने के लिए उतरे तो वे मस्ती में आपस में बातें करते हुए लापरवाही से उस ओर चले गए जिस ओर पानी गहरा था।

जब हम कई लोग होते हैं तो हमें एक दूसरे का सहारा होता है। यही सोचकर वे तीनों थोड़े निश्चिन्त थे। मगर वे यह नहीं जानते थे जब अपनी पर आ बनती है तब सबको अपनी–अपनी जान बचाने की पड़ती है। इन सब से अनजान वे उस समय गहरे पानी की ओर लापरवाही में बढ़ते रहे और फिर वही हुआ जिसकी आशंका थी। एक–एक करके वे तीनों ही खतरे की तरफ बढ़ते गए और गहरे पानी में डूबने लगे।

कहीं कोई बचने का सहारा न दिखाई दिया तो वे असहाय हो मदद के लिए पुकारने लगे। मगर उस खतरे में कोई अपने आपको नहीं

देखें पृष्ठ 13...

बचपन

सबसे न्यारा प्यारा बचपन।
आँखों का हो तारा बचपन।।

सर्दी-गर्मी का होश नहीं,
रहता कभी खामोश नहीं,
होती अमृतधारा बचपन।...

उछल-कूद करते रहते,
डाँट-डपट हँसकर सहते,
कभी नहीं हारा बचपन।...

दुःख दर्द का अहसास नहीं,
काम रहे कोई खास नहीं,
नहीं हो बेचारा बचपन।...

बचपन हो जाए शिक्षित,
राष्ट्र बन जाए विकसित,
ऐसे जाए सँवारा बचपन।...

सही दिशा गर मिल जाए,
जीवन की बगिया खिल जाए,
हो जाए उजियारा बचपन।...

भारती संस्कार अपनाओ,
भाईचारा प्यार बढ़ाओ,
जीवन बदले सारा बचपन।...

भूपसिंह भारती
रेवाड़ी (हरियाणा)

मोबाइल पाकर

बन्दर जी हो गये बहुत खुश
नया-नया मोबाइल पाकर।
जाने क्या खों खों करते हैं
उसे कान के पास लगाकर।

घूमा करते इधर-उधर हैं,
जंगल भर में अकड़े-अकड़े।
अपने सभी काम निपटाते
मोबाइल को पकड़े-पकड़े।

कई तरह के गेम उन्होंने
उसमें डाउनलोड कर लिए।
बहुत व्यस्त रहते हैं अब वह,
खेला करते गेम मुँह सिए।

भूल गए सब कूद-फाँद हैं
चढ़ना हरी-हरी डालों पर।
भूख प्यास का होश न रहता,
गड्ढे गहराये गालों पर।

कुछ भी नहीं सुहाता उनको,
जबसे मोबाइल पाया है।
उन्हें देख पशु-पक्षी कहते
देखो बन्दर पगलाया है।

डॉ. मृदुल शर्मा
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

बालक बना महान

परोपकारी, श्रेष्ठ उद्यमी

रतन टाटा

"मैं जैसा अन्दर हूँ वैसा ही बाहर भी और इसी के चलते मैं सबकी पहुँच में हूँ। ये मेरे लिए गर्व की बात है।" इस बात को कहने और इसमें पूरा विश्वास रखने वाले रतन टाटा का व्यक्तित्व सरलता, विनम्रता, नैतिकता व परोपकार की भावना से परिपूर्ण रहा।

पारिवारिक परिचय

रतन नवल टाटा का जन्म 28 दिसम्बर 1937 को मुंबई में एक पारसी परिवार में हुआ। उनके पिता श्री नवल टाटा और माता श्रीमती सूनी टाटा थे। रतन जब दस वर्ष के थे तभी उनके माता–पिता अलग हो गए थे जिससे उनका लालन–पालन उनकी दादी नवाजबाई टाटा ने दत्तक पुत्र के रूप में किया।

रतन टाटा कक्षा आठवीं तक कैंपियन स्कूल मुंबई में पढ़े। हाई स्कूल की शिक्षा के लिए वे कैथड्रिल और जॉन कॉनन स्कूल शिमला में पढ़े। उनकी उच्च शिक्षा कॉर्नेल विश्वविद्यालय एवं हार्वर्ड विश्वविद्यालय में हुई। उन्होंने कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर से स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

व्यवसाय में रखे कदम

रतन टाटा ने अपने काम की शुरुआत अमेरिका में बतौर आर्किटेक्ट से की। बाद में उन्हें जे.आर.डी. टाटा समूह में कार्य करने के लिए जमशेदपुर भेज दिया गया। वहाँ उन्होंने टेल्को कंपनी में छह महीने काम किया। वहाँ उन्हें बहुत संघर्ष का सामना करना पड़ा। 1962–63 के दौरान उन्हें कंपनी में शॉप फ्लोर पर विभिन्न विभागों में काम करने का अवसर मिला। सन् 1991 में जब जे आर डी टाटा ने सेवानिवृत्ति ली तो इन्हें टाटा संस का अध्यक्ष घोषित किया। उन्होंने टाटा समूह के अन्तर्गत टैटली, जैगुआर, लैंड रोवर और कोरस जैसी विदेशी कंपनियों को शामिल कर टाटा समूह को अन्तरराष्ट्रीय कंपनी के रूप में विकसित करने की पहल की।

कार्य कौशल से बनी पहचान

टाटा संस के अध्यक्ष का पद उनके लिए चुनौतीपूर्ण था लेकिन उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। सबसे पहले उन्होंने पूरे समूह को एकजुट किया और नई नीतियाँ बनाई जिसमें कर्मचारियों की सेवा निवृत्ति आयु, सहायक कंपनियों से सीधे सम्पर्क, टाटा समूह ब्रांड की प्रत्येक कंपनी को आवश्यक आर्थिक सहयोग में शामिल किया। धीरे–धीरे उन्होंने अन्य कंपनियों में भी अपना पैसा निवेश कर हर तरफ अपनी विजय पताका फहराई। इनका मुख्य कारोबार अभियांत्रिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, संचार, वाहन,

रासायनिक उद्योग, ऊर्जा, सॉफ्टवेयर, मोटर्स एवं घरेलू उपकरण, एयरलाइन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में फैला। भारत के शिक्षा और तकनीकी क्षेत्र में भी टाटा का योगदान अति महत्त्वपूर्ण है।

एक सामाजिक कार्यकर्ता

रतन टाटा भारत के सबसे प्रतिष्ठित उद्यमी में से एक थे। वह सामाजिक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध थे। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र के विकास के लिए टाटा ट्रस्ट के जरिए जल प्रबंधन, कृषि सुधार और रोजगार के लिए कई परियोजनाएँ चलाईं। उनके द्वारा अनेक छात्रवृतियाँ दी जा रही हैं। 2010 में उन्होंने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल को कार्यकारी केंद्र निर्माण के लिए 5 करोड़ डॉलर का दान दिया। उनका मानना था कि शिक्षा समाज के विकास की कुंजी है। उन्होंने देशभर में स्कूलों व कॉलेजों की स्थापना की।

कैंसर मरीजों के मसीहा

रतन टाटा ने "टाटा मेमोरियल अस्पताल" के माध्यम से कैंसर पीड़ितों की उल्लेखनीय सेवा की। इससे भारत में कैंसर के इलाज में एक अद्भुत क्रांति आई। यह कोई साधारण अस्पताल नहीं बल्कि कैंसर पीड़ितों को जीवनदान देने वाला केन्द्र है। गरीबों के लिए यहाँ बहुत कम खर्च अथवा निःशुल्क इलाज की पूरी व्यवस्था है। बाहर से आने वाले कैंसर पीड़ितों के लिए यहाँ मुफ्त भोजन एवं आवास की भी सुविधाएँ हैं।

अणुविभा द्धारा सन् 2023 का अणुव्रत पुरस्कार रतन टाटा को 27 अगस्त 2024 को प्रदान किया गया।

अद्भुत व्यक्तित्व के धनी

रतन टाटा के ये विचार सभी को प्रेरणा देते हैं– जीवन में गुरु का स्थान कोई नहीं ले सकता, जीवन में विपरीत परिस्थितियों को कभी हावी न होने दें, कोई काम छोटा नहीं होता, हमेशा सही काम करें, नतीजे जो भी आएँ। उनका मानना था कि जिस प्रकार लोहे को उसके जंग के सिवाय कोई नष्ट नहीं कर सकता, उसी प्रकार किसी व्यक्ति को उसकी मानसिकता के सिवाय और कोई नष्ट नहीं कर सकता। ऐसे सादगी पसन्द, उद्योग जगत के 'पितामह' कहलाने वाली इस विभूति को भारत सरकार द्वारा सन् 2000 में पद्म भूषण एवं सन् 2008 में भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान "पद्म विभूषण" से नवाजा गया। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा उन्हें अणुव्रत पुरस्कार 2023 प्रदान किया गया।

ऐसे अद्भुत विचारों के धनी कर्मनिष्ठ व राष्ट्रभक्त रतन नवल टाटा ने 9 अक्टूबर 2024 को दुनिया से अलविदा कह दिया।

सुशीला शर्मा
जयपुर (राजस्थान)

- भारत के इस लाल ने अपने 87 साल की उम्र तक करोड़ों लोगों के हृदय को छूकर उनके जख्मों पर मरहम लगाने का काम किया और जन मानस के दिलों में जगह बना ली थी।
- मुंबई ताज होटल में आतंकी हमले के बाद वे व्यक्तिगत रूप से कर्मचारियों और होटल के आसपास के ठेलेवालों के घर गए और उनकी मदद की।
- वे कुत्तों और जानवरों से बहुत प्यार करते थे। उन्होंने कई आवारा कुत्तों को गोद लिया। उनके मुफ्त इलाज के लिए पशु अस्पताल खुलवाए।

'सुन ली पुकार' पृष्ठ 9 का शेष....

डालना चाहता था। इसलिए वे सारे के सारे दूर खड़े–खड़े तमाशा देख रहे थे। इस बीच डूबते बच्चों की दर्द भरी आवाज को सुनकर चौदह साल के प्रताप विकूभाई खाचर से न रहा गया। उसे बहुत ज्यादा तैरना नहीं आता था मगर फिर भी उसके दिल को किसी को अपने सामने डूबते देखना मंजूर नहीं था। वह पानी में कूदा और तैरता हुआ उन तीनों की ओर बढ़ने लगा। उसने बिना किसी बात की परवाह किए, उन्हें बचाने के लिए कमर कस ली।

इस बीच उन तीनों को वहाँ पर फँसे कुछ देर हो गई थी और बचाव के लिए पुकारने और प्रताप के आने के बीच उनकी कई डुबकियाँ भी लग चुकी थीं। जब प्रताप उनके पास पहुँचा, तब तक वे बिलकुल असहाय हो चुके थे। उनके पेट में नाक और मुँह के जरिए काफी पानी जा चुका था। प्रताप ने उनके हाथ को सावधानीपूर्वक पकड़ा और एक–एक कर खींचते हुए किनारे की ओर ले आया।

अब किनारे पर खड़े लोगों को अपना काम दिखाने का मौका मिल गया। उन्होंने उन तीनों को सहारा देकर किनारे से ऊपर निकाला। फिर वे उन्हें प्राथमिक सहायता देने में लग गए। उनके पेट से पानी निकाला गया तो कुछ देर बाद उन्हें होश आ गया। सभी लोगों की नजर में इस समय प्रताप हीरो बन चुका था। उन सब ने प्रताप की हिम्मत की बहुत तारीफ की। अखबारों में प्रताप के इस साहसिक कारनामे की खबर छपी।

वर्ष 2003 का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रताप को देश के प्रधानमन्त्री ने प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

यहाँ दिये गये वर्गों में बीच का स्थान रिक्त है। आपको इनमें ऐसा उपयुक्त वर्ण या मात्रायुक्त वर्ण भरना है जिससे दोनों तरफ से पढ़ने पर दो सार्थक शब्द बन सके।

(1)

	क	
प		ड़
	नी	

(2)

	चे	
म		ल
	रा	

(3)

	सा	
रा		स
	र	

(4)

	जि	
वि		न
	सा	

(5)

	सू	
गौ		व
	ज	

(6)

	आ	
मं		र
	त्य	

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

विस्मयकारी भारत-21

मध्यप्रदेश के ऐतिहासिक शहर ग्वालियर में 11वीं शताब्दी में निर्मित सास-बहू का मन्दिर भगवान विष्णु को समर्पित है पर इसके नाम की वास्तविकता कुछ और ही बखान करती है।

स्थानीय नागरिकों की मान्यता के विपरीत, वास्तविक तथ्य यह है कि मन्दिर का सास-बहू वाला यह नाम सहस्त्रबाहु शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है जो भगवान विष्णु का ही दूसरा नाम है।

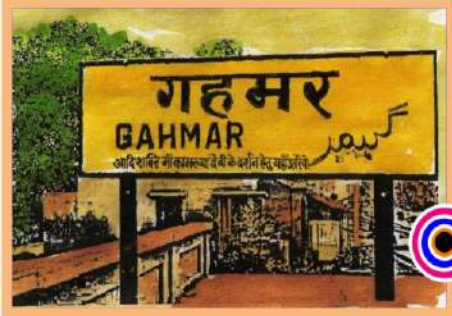

गाज़ीपुर (उ.प्र.) का गहमर, केवल भारत का ही नहीं पूरे एशिया का सबसे बड़ा गांव है जिसकी जनसंख्या एक लाख बीस हज़ार और क्षेत्रफल आठ वर्गमील है। यह सन 1530 में बसा था और आज भी यह अकेला ऐसा गांव है जिसके प्रत्येक घर का कोई न कोई सदस्य देश की सेना में अपनी सेवाएं देता रहा है।

भारत शल्य चिकित्सा और प्लास्टिक सर्जरी का जनक रहा है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व काशी में जन्में सुश्रुत द्वारा लिखी गई 'सुश्रुत संहिता' को भारतीय चिकित्सा पद्धति में विशेष स्थान प्राप्त है।

इस ग्रन्थ में आठ प्रकार की शल्य क्रिया का वर्णन है : छेद्य, भेद्य, लेख्य, वेध्य, ऐष्य, अहार्य, विश्रव्य व सीव्य।

वाराणसी के युवा वैज्ञानिक श्याम चौरसिया ने भारतीय फ़ौज के लिए एक ऐसा जूता तैयार किया है जो 20 किमी. दूर से घुसपैठियों की आहट को सुनकर पहनने वाले जवान को न सिर्फ़ होशियार कर सकता है बल्कि इस जूते में लगे दो फोल्डिंग 9 एम.एम. के गन बैरल महज़ कुछ सेकेंड्स में आहट पहचान कर लक्ष्य पर फ़ायर भी कर सकते हैं।

रवि लायटू
बरेली (उत्तर प्रदेश)

हैप्पी क्रिसमस

आज साइमन बहुत खुश था। जिस खास दिन का उसको पूरे एक साल से इन्तजार था, वह दिन आज आ गया था। कल हैप्पी क्रिसमस है। आज की रात सान्ता क्लॉज बच्चों को क्रिसमस का उपहार बाँटने आयेंगे। साइमन की दादी ने बताया था कि क्रिसमस से पहले वाली रात जब सभी लोग सो जाते हैं, तब सान्ता क्लॉज एक बड़े से थैले में पेन, पेंसिल, ढेर सारे खिलौने, केक, चॉकलेट और मिठाइयाँ वगैरह लेकर निकलते हैं और बारी–बारी सभी घरों में जाते हैं। वह अच्छे बच्चों को प्यार करते हैं और उनके मोजे में चुपके से कोई अच्छा–सा उपहार रख देते हैं। सांता क्लॉज के पास एक दूसरा थैला भी होता है जिसमें कोयला रखा होता है। गन्दे बच्चों के मोजे में वह उपहार की जगह कोयला रख देते हैं।

''सान्ता क्लॉज ऐसा क्यों करते हैं दादी?'' साइमन ने पूछा। दादी ने बताया– ''बच्चों को यह समझाने के लिए कि जीवन में यदि आगे बढ़ना है तो अच्छी आदतें डालनी चाहिए।''

''दादी! सान्ता क्लॉज को कैसे पता चल जाता है कि कौन लड़का अच्छा है और कौन लड़का खराब?'' साइमन ने दादी से अगला प्रश्न किया। ''लगता तो यह कल्पना जैसा है लेकिन कहा जाता है कि सान्ता क्लॉज के पास एक पेन और एक मोटी–सी डायरी होती है। पूरे साल वह आसमान में बादलों के उस पार बैठकर ऊपर से सारे बच्चों को देखते रहते हैं और कौन बच्चा अच्छा या खराब, कैसा काम कर रहा है, सब कुछ अपनी डायरी में लिखते रहते हैं।'' दादी ने समझाया।

आज क्रिसमस से पहले वाला दिन आ गया था। रात होते ही साइमन ने दादी के कहने के अनुसार एक साफ मोजा अपने कमरे की खिड़की से लटका दिया। वह बिस्तर में लेटा तो काफी देर तक उसको नींद ही नहीं आयी। वह जागता रहा और सान्ता क्लॉज के आने की राह देखता रहा। फिर जाने कब

उसको नींद आ गयी। सवेरे सोकर उठा तो साइमन की खुशी का ठिकाना नहीं था। उसके मोजे में चाबी भरने से नाचने वाली एक खिलौना गुड़िया, कलर पेंसिल का एक पैकेट तथा ढेर सारे चॉकलेट रखे थे। पहले उसने मोजे से चॉकलेट निकाल कर अपनी जेब में भरे, फिर कलर पेंसिल का पैकेट स्कूल के बस्ते में रखा उसके बाद गुड़िया निकाली और चाबी भरकर उसे नचाने लगा।

''साइमन! जल्दी से तैयार हो जाओ बेटे, अभी हमें चर्च चलना है।'' दादी ने कहा तो गुड़िया को मेज पर रखकर वह बाथरूम की ओर भागा। थोड़ी देर में नहा–धोकर, नए कपड़े पहन कर साइमन और उसके मम्मी, पापा, दादी सभी लोग चर्च गए। साइमन के हाथ में सान्ता क्लॉज से उपहार में मिली खिलौना गुड़िया थी तथा पैंट की दोनों जेबों में चॉकलेट भरे थे। चर्च के बाहर सड़क के किनारे फटे–पुराने कपड़े पहने कई बच्चे खड़े थे जो हर आने–जाने वाले के सामने हाथ फैलाकर कुछ माँग रहे थे। चर्च जाने वाले लोग उन बच्चों को केक, बिस्किट, मिठाई या पैसे, कुछ न कुछ दे रहे थे। उन गरीब बच्चों को देखकर साइमन की दादी भी रुक गयीं और अपने बटुए से पैसे निकाल कर उन सभी को एक–एक सिक्का देने लगीं। अचानक साइमन के मन में जाने क्या आया कि उसने भी अपनी जेब से चॉकलेट निकाली और उन गरीब बच्चों को एक–एक चॉकलेट बाँट दी। 'हैप्पी क्रिसमस' कह कर उसने सबको शुभकामनाएँ दी। चॉकलेट पाकर बच्चों के चेहरे खिल उठे।

''दादी! मैंने यह अच्छा काम किया है न?'' बच्चों को चॉकलेट देने के बाद साइमन ने दादी से पूछा। ''हाँ मेरे राजा बेटे, तुमने बहुत अच्छा काम किया है। गरीबों की मदद करना बहुत अच्छा काम है। दुनिया के सारे कामों से नेक काम है यह।''दादी ने कहा और साइमन का माथा चूम लिया। तभी मम्मी बोली ''यह कितनी अच्छी बात है साइमन कि तुम्हें चॉकलेट का लालच नहीं है। सान्ता क्लॉज सच में किसी के घर आते हैं या नहीं, पता नहीं। लेकिन अच्छा बच्चा बनने की उनकी सीख हमें जरूर माननी चाहिए।''

अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

अंक मिलाओ

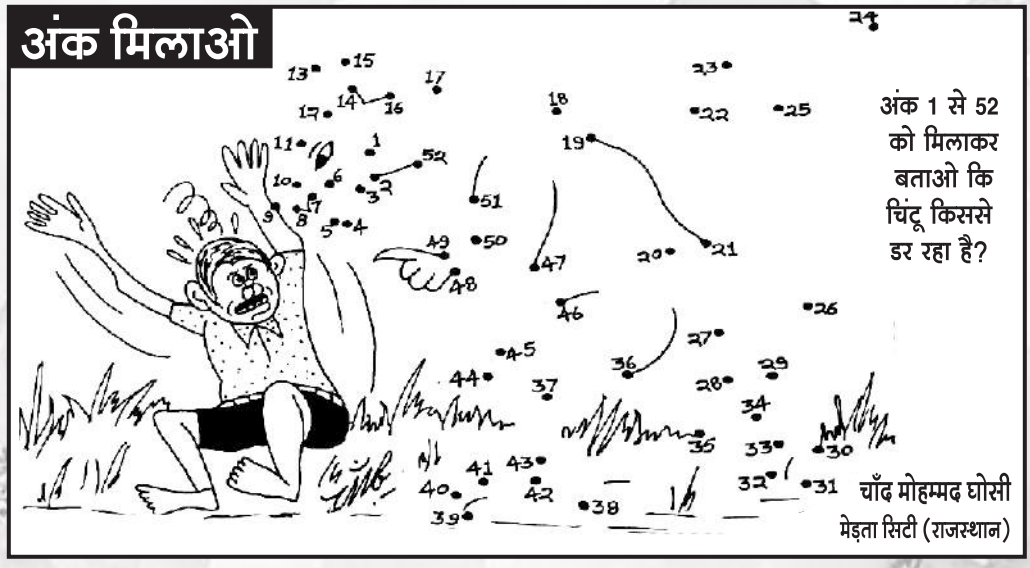

चाँद मोहम्मद घोसी
मेड़ता सिटी (राजस्थान)

वर्ग पहेली

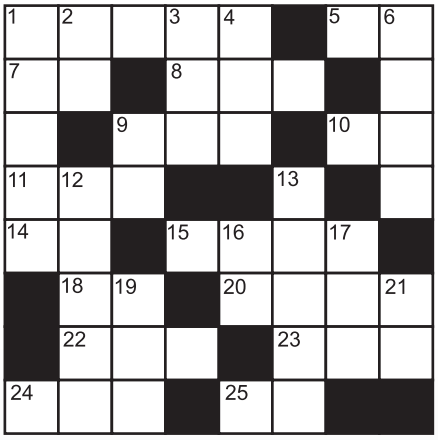

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री (3, 2)
5. सूर्य, दिनकर, सूरज (2)
7. वर्ष, बारह मास का समय (2)
8. पक्का विचार, समझ (3)
9. रोगी, बीमार (3)
10. मुँह में बनने वाला रस (2)
11. यश देने वाला, जस्ता, एक धातु (3)
14. सीमा, अवधि सूचक शब्द (2)
15. प्रसिद्ध कवि, मेघदूत के रचयिता (4)
18. दौड़ना (अंग्रेजी), क्रिकेट में जीत की एक इकाई (2)
20. रंग खेलने का साधन (4)
22. महिलाओं की कलाई का एक आभूषण (3)
23. हमेशा घूमता रहने वाला (3)
24. सहायता(3)
25. कर्ज, उधारी (2)

ऊपर से नीचे

1. मानवता पूर्ण व्यवहार (5)
2. हृदय, मन, चित्त (2)
3. सौ कौरवों की माँ (3)
4. धैर्य, सन्तोष, सब्र (3)
6. विचार करने वाला (4)
9. अहंकार, बजट का एक भाग (2)
12. जमीन में उगने वाली एक मीठी मूल (3, 2)
13. उत्तम आचरण (5)
16. वाणी का लिखित रूप (2)
17. कामना सहित (3)
19. भौतिक मुद्रा, उधार का विलोम (3)
21. खाली, रिक्त (2)
22. फूँक, चाबुक, खिंचाव (2)

उत्तर इसी अंक में

कबीर वाणी...

मानुष जन्म दुर्लभ है, देह न बारम्बार।
तरवर थे फल झड़ी पड्या, बहुरि न लागे डारि।

कबीरदास जी कहते हैं कि मानव जन्म पाना कठिन है। यह शरीर बार–बार नहीं मिलता। जैसे, फल वृक्ष से नीचे गिरने के बाद वापस नहीं लग सकता उसी तरह बीता हुआ समय वापस नहीं आता। अतः हमें आलस छोड़ कर समय का सही उपयोग करना चाहिये।

कैसे नाक निचोड़ें जी

कड़क ठंड में, बहुत कठिन है,
बिस्तर कैसे छोड़ें जी।
लगता है कम्बल के ऊपर,
फिर कम्बल इक ओढ़ें जी।

लेकिन मुझको शाला जाना,
मजबूरी में उठना है।
मुँह से भाप उड़ाते मुझको,
इंजन जैसा चलना है।
अब तो लगता शीत लहर के,
कसकर कान मरोड़ें जी।...

स्वेटर कोट बदन के ऊपर,
कन टोपा है कानों पर।
घूम रही है ठंड बेशरम,
गलियों, पथों मकानों पर।
आवारा फिर रहा कुहासा,
दर्प* किस तरह तोड़ें जी।...

जाड़े ने तो गजब ढा दिया,
तन में है कम्पन भारी।
ठंडी बेंच बहुत कक्षा की,
किन्तु बैठना लाचारी।
हाथ अकड़ते, कैसे भैया,
दस में दस हम जोड़ें जी।...

आँखें लाल बह रहा पानी,
बजती नाक घरा-घर-घर।
है जुकाम पूरे दम-खम से,
निकल रहा भर्राया स्वर।
गुमा रुमाल कहीं रस्ते में,
कैसे नाक निचोड़ें जी।...

*दर्प - अहंकार, घमंड

प्रभुदयाल श्रीवास्तव, छिंदवाड़ा (मध्य प्रदेश)

जबरा

एक पैर से है लँगड़ाता
पास न कोई उसके जाता
कुत्ता है वह झबरा-झबरा
सब उसको कहते हैं जबरा।

उसको जो भी आँख दिखाता
उसे दूर तक वह दौड़ाता
जिस-जिस ने भी उसको डाँटा
उन सबको ही उसने काटा।

जब कुछ खाने को ना पाता
जोर-जोर से वो चिल्लाता।
टॉफी, बिस्कुट, आलू, गोभी
दिखे हाथ में जिसके जो भी।

छीन लिया करता हाथों से
भागे लेकर वो दाँतों से।
एक रोज मैंने डर-डर के
बस थोड़ी सी हिम्मत करके।

सिर पर उसके हाथ फिराया
शायद उसको रोना आया।
मुझे देखता रहा एकटक
कूँ-कूँ करता रहा देर तक।

शादाब आलम
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

गोल-गोल रोटी

पात्र परिचय : सुमित, सुमित की छोटी बहन अक्षिता, उनकी मम्मी अमिता और पापा आलोक

(पर्दा उठता है। स्कूल यूनिफार्म में सुमित का स्टेज पर प्रवेश, चेहरे पर क्रोध के भाव दिखाई देते है। वह अपना बैग सोफे पर फेंक देता है और सिसकियाँ लेते हुए औंधे मुँह लेट जाता है। अपने बेटे की यह दशा देख अमिता किचन से दौड़ते हुए आती है। सुमित का सिर अपनी गोद में लेती है।)

अमिता : (पुचकारते हुए) क्या हुआ मेरे राजा बेटे को... क्यों रो रहा है? क्या स्कूल में किसी से तुम्हारा झगड़ा हो गया है या टीचर ने तुम्हें कुछ कहा है?

(आवाज सुनकर अक्षिता आती है।)

अक्षिता : (जोर से हँसती है) मम्मी, भैय्या ने जरूर स्कूल में शैतानी की होगी। तभी इसकी धुलाई हुई है।

सुमित : (जोर से चिल्लाता है) चुप कर.. अक्षु... नहीं तो मैं अभी तेरी धुलाई कर दूँगा।

(कहते हुए वह अमिता की गोद से उठकर भागने की कोशिश करता है.. पर अमिता उसे पकड़े रखती है।)

अमिता : अक्षिता, तुम चुप रहो! तुम अपने कमरे में जाकर पढ़ाई करो। तुम्हें बीच में नहीं बोलना चाहिये।

(सुमित को चिढ़ाते हुए अक्षिता अपने कमरे में चली जाती है।)

अमिता : हाँ बेटा! बताओ क्या हुआ आज स्कूल में?

सुमित : (सिसकियाँ भरते हुए) मम्मी, मेरी टीचर बहुत खराब है।

अमिता : नहीं, बेटा... टीचर के बारे में ऐसा नहीं कहते। टीचर तो अच्छी होती है। वह तुम्हें पढ़ाती है। तुम्हारे ज्ञान को बढ़ाती है। तुम्हें बहुत सारी अच्छी–अच्छी तथा नई–नई बातें बताती है। वह तुम्हें अच्छा नागरिक बनाने तथा जीवन में आगे बढ़ने में सहायता करती है।

सुमित : नहीं मम्मी, मेरी टीचर अच्छी नहीं है। उन्होंने आज फिर मेरी डायरी में खराब

हैंडराइटिंग का रिमार्क लिख दिया है। क्या मेरी हैंडराइटिंग इतनी खराब है?

(अमिता कुछ बोलती नहीं है, धीरे से हँसती है।)

सुमित : यह क्या? मम्मी, तुम तो हँस रही हो?

अमिता : और नहीं तो क्या सुमित! तुम्हारी हैंडराइटिंग के बारे में मैंने भी तो तुम्हें कई बार टोका है। कभी–कभी तो तुम क्या लिखते हो, पढ़ना मुश्किल हो जाता है। बेटा, तुम अभी अपनी हैंडराइटिंग सुधारने की कोशिश करोगे तो सुधर जाएगी, बाद में इसे सुधारना बहुत मुश्किल हो जाएगा।

सुमित : पर मम्मी, खराब हैंडराइटिंग से क्या फर्क पड़ता है? मैं स्पेलिंग मिस्टेक नहीं करता हूँ, व्याकरण की गलतियाँ भी नहीं करता हूँ, प्रश्नों के उत्तर भी सही लिखता हूँ।

अमिता : (मंद मुस्कान के साथ) सुमित बेटा, लिखावट सुन्दर हो तो पढ़ने का मन होता है। खराब हैंडराइटिंग कोई पढ़ना नहीं चाहता है। मोतियों के समान अक्षरों को देखना और पढ़ना हर कोई पसन्द करता है। जब मैं स्कूल में पढ़ती थी तब मेरी हैंडराइटिंग बहुत ही सुन्दर थी। अपनी स्कूल में नोटिस बोर्ड पर सुविचार लिखने का काम हमेशा मेरे ही जिम्मे रहता था। यही नहीं, हेडमास्टरजी नोटिस बोर्ड पर लगाई जानेवाली महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ मुझ से ही लिखवाते थे। बचपन में लिखावट अच्छी होने का नतीजा यह है कि आज भी मेरी हैंडराइटिंग सुन्दर है।

सुमित : मम्मी, आप तो फिर अपने जमाने की बातें करने लगी।

अमिता : ठीक है बाबा! अपना लेक्चर बन्द करती हूँ। अब चलो जल्दी से हाथ–मुँह धो लो। आज मैंने तुम्हारे लिए आलू के परांठे बनाए हैं।

सुमित : वाह मम्मी! मेरी मनपसन्द डिश बनाने के लिए थेंक्यू।

(सुमित उठकर चला जाता है तथा अमिता किचन की ओर बढ़ जाती है।)

दृश्य–दो

(रसोई में अमिता शाम के भोजन की तैयारी कर रही है। अक्षिता रोटियाँ बनाने में उसकी सहायता कर रही है। अक्षिता दो रोटियाँ बनाती है जिनका आकार टेढ़ा–मेढ़ा बन जाता है।)

अक्षिता : (हँसते हुए) मम्मी! देखो ना, मुझ से तो ऐसी बेढ़ंगी रोटियाँ बन रही है!

अमिता : (रोटियाँ देखते ही खुशी से) यूरेका.. यूरेका!

अक्षिता : (आश्चर्यचकित होते हुए) क्या हो गया मम्मी? इतनी खुश क्यों हो रही हो!

अमिता : (चुप रहने का इशारा करते हुए) अक्षु.. तुम चुपचाप ऐसी ही दो रोटियाँ और बना दो। बाकी की रोटियाँ मैं बना दूँगी और इस बारे में किसी से भी कुछ मत कहना। मैं डायनिंग टेबल पर आज एक ड्रामा करूँगी। बस थोड़ा इन्तजार करो।

(अक्षिता वैसी ही दो रोटियाँ और बनाती है।)

दृश्य– तीन

(परिवार के सभी सदस्य डायनिंग टेबल पर रात का भोजन करने के लिए बैठे हैं। अमिता सभी की थाली में सब्जी, रोटी, दाल, चावल, सलाद आदि परोसती है।)

सुमित : (अपनी थाली में रखी रोटियाँ देखता है और क्रोधित हो जाता है) मम्मी, ये कैसी रोटियाँ आपने मुझे परोसी हैं? ऐसी गन्दी रोटियाँ किसने बनायी हैं? इनका कोई शेप भी नहीं है। ऐसी टेढ़ी–मेढ़ी और बेढ़ंगी रोटियाँ मुझे पसन्द नहीं है। देखो तो, ये कितनी खराब लग रही हैं।

(सुमित की बात सुनकर अमिता मंद–मंद मुस्कुराती है।)

अक्षिता : (खुशी से दिखाते हुए) मेरी प्लेट में तो गोल–गोल रोटियाँ है।

आलोक : (मुस्कुराते हुए) भई! हमारी प्लेट में भी गोल–गोल रोटियाँ हैं।

सुमित : (झल्ला उठता है) मम्मी, बोलो ना! ऐसी बेढ़ंगी रोटियाँ मुझे ही क्यों परोसी है? मैं नहीं खाऊँगा।

(कहते हुए सुमित उठने लगता है मगर अमिता तुरन्त उसका हाथ पकड़कर बैठा देती है।)

अमिता : सुमित, ये रोटियाँ मैंने ही बनायी है। इनका आकार थोड़ा बिगड़ गया तो क्या हो गया, ये रोटियाँ गरम और ताजा हैं फिर शुद्ध आटे की हैं और ये कच्ची भी नहीं हैं।

सुमित : ओह! मम्मी परन्तु इनका आकार कितना बेढ़ंगा है, ये दिखने में भी अच्छी नहीं लग रही हैं। रोटियों का आकार तो गोल होता है। मुझे तो गोल रोटियाँ ही अच्छी लगती हैं।

अमिता : बेटा, मैंने जानबूझकर ये बेढ़ंगी रोटियाँ तुम्हारे लिए बनवायी है ताकि सुन्दरता क्या होती है, इसका तुम्हें ज्ञान हो सके। जिस तरह तुम्हें ये रोटियाँ अच्छी नहीं लगी जबकि इनका केवल आकार ही थोड़ा अलग है, इसी तरह...।

(सुमित बीच में बोल पड़ता है।)

सुमित : मैं कुछ समझा नहीं मम्मी। जल्दी से बोलो..ना..मुझे जोर से भूख लगी है।

अमिता : हाँ बेटे, मैं वही तो बता रही हूँ। तुम्हारे अक्षर भी इन रोटियों की तरह ही होते हैं। तुम्हारे शब्द और वाक्य शुद्ध होने के बावजूद तुम्हारी खराब लिखावट के कारण अच्छे नहीं लगते हैं। लोग खराब लिखावट पढ़ना पसन्द नहीं करते हैं। तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर यद्यपि सही होते हैं पर लिखावट इतनी खराब होती है कि उसे पढ़ने की इच्छा नहीं होती है।

(सुमित बहुत ही ध्यान से उनकी बातें सुनता है।)

अमिता : बेटा, प्लेट में आकर्षक सुन्दर फुलके आते ही हम उन पर टूट पड़ते हैं। इसी तरह मोतियों जैसे अक्षरों को हर कोई पढ़ना पसन्द करता है। अच्छी हैंडराइटिंग की हर कोई तारीफ करता है और परीक्षा में अंक भी पूरे मिलते हैं।

सुमित : (सहमति से मुस्कुराते हुए) बस, मम्मी बस, मुझे अब अच्छी लिखावट का महत्त्व समझ में आ गया है। मैं आज से ही अपनी लिखावट पर ध्यान दूँगा।

(सुमित की बात सुनकर सभी मुस्कुराते हुए ताली बजाने लगते हैं, सुमित भी खुशी से मुस्कुराने लगता है। अमिता उसकी थाली से बेढ़ंगी रोटियाँ निकाल देती है और उसे गोल–गोल रोटियाँ परोसती है।)

(पर्दा गिरता है।)

ताराचंद मकसाने
मुम्बई (महाराष्ट्र)

हँसी की फुहार

चिंटू (मिंटू से) -बैठे-बैठे क्या सोच रहा है भाई?
मिंटू - यही कि जिसने पहली बार दही जमाया होगा, वो जामण कहाँ से लाया होगा?

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

मेहनत का मोल

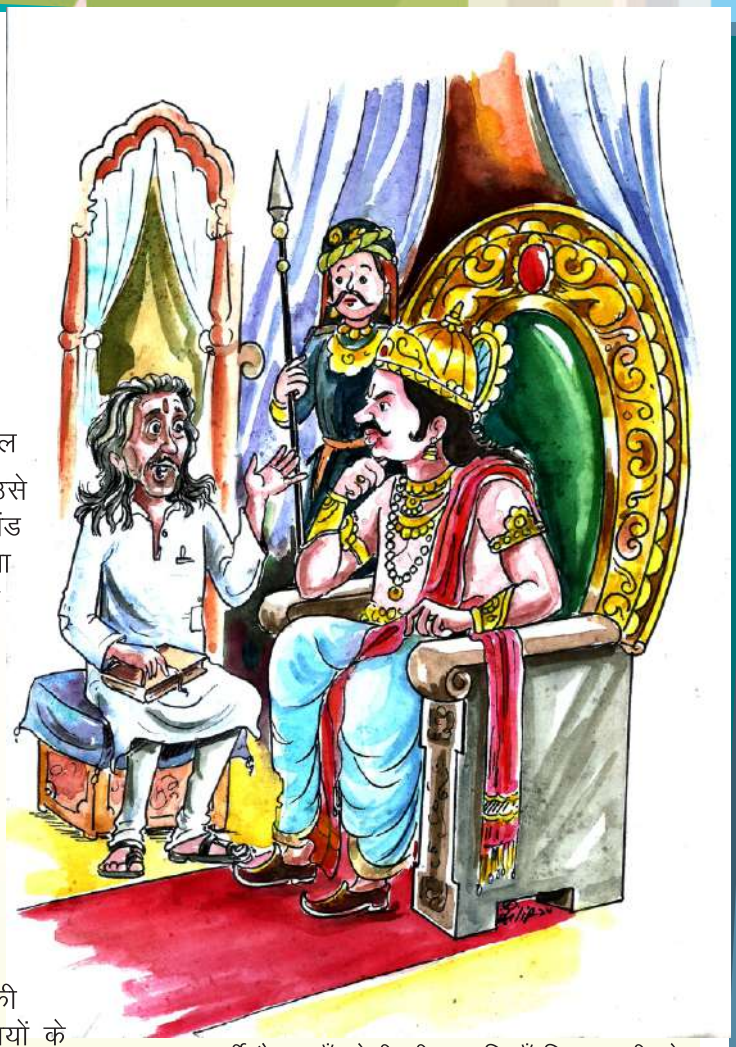

वह एक बड़े राजमहल में रहने वाली महारानी थी। उसे अपने रूप और धन का बहुत घमंड था। उसकी शान की कोई सीमा नहीं थी। जाड़े की ऋतु शुरू होने को थी। सूर्य उदय अभी नहीं हुआ था। हाँ, पूरब में बादल लाल होने लगे थे। लगता था, कुछ ही देर बाद सुबह होने वाली है। रानी को अचानक गंगा नहाने की इच्छा हुई। उसने अपनी सखियों को बुलवाया। गंगा स्नान की बात कही। उसकी सारी सहेलियाँ प्रसन्न हो गई।

फिर क्या था! पालकी सजाई गई। रानी अपनी सहेलियों के साथ गंगा के किनारे पहुँची। पालकियों से उतरकर वे गंगा के ठंडे पानी में नहाने लगीं। हालाँकि सर्दी थी, पर वे बहुत देर तक गंगा के पानी में नहाती रहीं। सूर्य अब निकल आया था। चारों ओर सुनहरी किरणें फैल गई थी। काफी देर नहाने के बाद वे पानी से बाहर आईं। सर्दी से वे ठिठुर रही थीं। नये वस्त्र पहनने के बाद रानी ने अपनी दृष्टि गंगा के हरे सपाट मैदानों पर डाली। वह यह सुन्दर दृश्य देखकर प्रसन्नता से भर उठी। एकाएक उसकी दृष्टि पास ही की एक झोपड़ी पर पड़ी।

तभी दूसरी सहेली जो सर्दी से ठिठुर रही थी, रानी के पास आकर बोली– ''रानी जी, सर्दी है। यहाँ थोड़ी सी लकड़ियाँ मिल जाती तो हम कुछ देर अपने शरीर को गर्म कर लेतीं।''

''हाँ, विचार तो अच्छा है तुम्हारा। सर्दी कुछ ज्यादा है। फिर हम बहुत देर तक ठंडे पानी में नहाती रहीं। अरे हाँ, लकड़ियों की क्या जरूरत है? यह जो झोपड़ी है, इसी में आग लगा दो। हम अच्छी तरह गरम हो जाएँगी।'' रानी ने उत्तर दिया। रानी की बात सुनकर एक सहेली योगिता बोली– ''ऐसा मत करो रानी जी, किसी गरीब का झोपड़ा है। बेचारा आने पर इसे जला देखकर कितना दुःखी होगा।'' ''दुःखी होगा तो होगा? इससे हमें क्या?'' रानी बोली।

''नहीं महारानी, सोचिए भला शाम को वह कहीं से थका–मांदा लौटेगा। आराम के

लिए जब उसे झोंपड़ा जला हुआ मिलेगा, तब उस पर क्या गुजरेगी ? सर्दी कितनी है ? रात को फिर वह कहाँ सो पाएगा ? हम सब इस धूप और कपड़ों के होते हुए भी ठिठुर रही हैं। सर्दी में वह अकेला इस जंगल में कहाँ कैसे क्या करेगा?'' योगिता फिर बोली। ''नहीं मैं एक महारानी हूँ। किसी का भी घर उजाड़ सकती हूँ। तुम्हें इस झोपड़ी वाले पर दया क्यों आ रही है? मैं तो इसे जलाकर अपनी सर्दी दूर भगाऊँगी।'' रानी बोली।

''वैसे आपकी मरजी। पर मेरा तो यही कहना है कि आप किसी गरीब के झोपड़े को न जलाएँ। शरीर ही सेंकना है तो हम इधर–उधर से लकड़ियाँ बीन लाती हैं, उन्हें जलाकर सेंक लेना।'' योगिता बोली। ''नहीं, मैं तो अब इस झोपड़े को जलाकर ही दम लूँगी।'' इतना कहकर रानी ने झोपड़ी को आग लगवा दी।

झोपड़ी धू–धू कर जल उठी। रानी व अन्य सहेलियाँ खिल–खिलाकर हँसती हुई अपने को तपाने लगीं। पर योगिता एक ओर खड़ी रही। वह उनकी हरकत से मन ही मन बहुत दुःखी हो रही थी। उसे झोपड़ी को जलाए जाने का दुःख था। कुछ ही देर में झोपड़ी जलकर राख का ढ़ेर हो गई। वे सब हँसती हुई महलों में लौट आई।

शाम को झोपड़ी वाला युवक लौटकर आया। उसने देखा झोपड़ी नदारद थी। वह हक्का–बक्का रह गया। देखा तो झोपड़ी किसी ने जला दी थी। वह युवक बहुत देर तक फफक–फफक कर रोता रहा। चारों तरफ रात घिर आई थी। उसने चारों ओर देखा। उसने वहाँ अपने आपको अकेला पाया। झोपड़ी जैसे उसकी साथिन थी। झोपड़ी के न होने से जैसे उसका सब कुछ लुट गया था। वह रोता हुआ उठा और पास ही के एक पेड़ पर चढ़कर रात बिताने लगा। वह सर्दी से बचने के लिए बराबर अपने को सिकोड़ता जा रहा था।

सुबह हुई। वह पेड़ से उतरा। दैनिक क्रियाओं से निबटकर वह राजमहलों की ओर चल दिया। वह राजा को अपनी जली झोपड़ी की बात कह कर न्याय चाहता था। वह जानना चाहता था कि उसकी झोपड़ी बिना किसी कारण के क्यों जलाई गई है? उसका तो कोई दुश्मन भी नहीं है। फिर भला उसकी झोपड़ी क्यों जला दी गई? वह महलों के द्वार पर जा डटा। द्वारपाल से कहा कि वह राजा से मिलना चाहता है।

द्वारपाल ने राजा से जाकर कहा कि महाराज एक युवक आपसे मिलना चाहता है। राजा दरअसल राजा था। प्रजा का दुःख अपना दुःख मानता था। सारी प्रजा को अपने पुत्र के समान चाहता था। सुबह–सुबह किसी को आया देखकर वह चिन्तित हुआ। द्वारपाल से राजा ने कहा कि वह युवक को जल्दी लेकर आए। युवक आया तो राजा ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। कुर्ता–धोती और माथे पर तिलक। बढ़े हुए लम्बे–लम्बे बाल। हाथ में हस्तलिपि में लिखी हुई कोई पुस्तक थी।

''कहो युवक, क्या परेशानी है। सुबह–सुबह कैसे कष्ट किया?'' राजा ने उसे आसन देते हुए कहा। ''कुछ नहीं राजन! मैं एक कवि हूँ। कविताएँ लिखता हूँ जैसे–तैसे दिन गुजारता हूँ। पता नहीं कल किसी ने मेरी झोपड़ी जला दी। मेरा किसी से वैरभाव भी नहीं है। मैं जानना चाहता हूँ कि मेरी झोपड़ी क्यों जलाई गई है? भला किसी को किसी का घर उजाड़ने का क्या हक है?'' युवक कवि बोला। ''फिजूल में ही किसी ने तुम्हारी झोपड़ी को जला दिया!'' राजा ने आश्चर्य से पूछा। ''हाँ, बेकार में। मैं कल सारे दिन पास ही के गाँव में गया था। आकर देखा तो झोपड़ी राख का ढेर बनी पड़ी थी।''

''मुझे बहुत दुःख है कवि! मुझे कुछ समय दो, मैं इसके लिए कुछ करूँगा। विश्वास करो, तुम्हें न्याय अवश्य मिलेगा। तब तक तुम्हारे रहने का इन्तजाम करवा देता हूँ।'' राजा ने नम्रता से कहा। राजा ने उस कवि के

रहने का इन्तजाम करवा दिया और झोपड़ी जलाने वाले की खोज प्रारम्भ कर दी। दो दिन बाद राजा को पता चला कि वह झोपड़ी तो एक दिन जब रानी गंगा नहाने गई थी, तब जलाई गई थी। राजा को धक्का लगा। वह गुस्से से काँप गया। उसे रानी से ऐसी आशा नहीं थी। वह सोचने लगा, वह इस घमंडी रानी को अवश्य पाठ पढ़ाएगा।

राजा रानी के कमरे में गया तो रानी उस समय शृंगार कर रही थी। काँच में रानी ने राजा को भीतर आते हुए देखा। वह राजा के स्वागत के लिए दरवाजे पर आई। राजा उदास था, रानी डरी। राजा आकर एक आराम कुर्सी पर पसर गया। रानी उसके पास ही एक दूसरी कुर्सी पर बैठ गई। ''क्यों रानी! क्या उस दिन गंगा किनारे वाली झोपड़ी को तुमने जलवाया था?'' राजा ने पूछा।

''हाँ, मेरे आदेश पर जलाई गई थी। क्यों क्या हुआ?'' ''क्यों जलाई थी?'' राजा ने पूछा। ''क्या मैं एक दस–बीस रुपयों की किसी चीज को नहीं उजाड़ सकती? मैं एक रानी हूँ। मैं किसी का भी घर उजाड़ सकती हूँ।'' रानी बोली। राजा उसके इस उत्तर से तिलमिला गया और जोर से बोला– ''किसी को किसी का घर उजाड़ने का कोई हक नहीं है। चाहे वह रानी ही क्यों न हो।'' रानी डर गई। राजा कमरे से बाहर निकलने को हुआ, पर वह फिर पलटा और बोला– ''खेद है, तुम अब न तो राजा की रानी हो ओर न इन महलों में रहने का तुम्हारा कोई अधिकार है, तब तक जब तक कि तुम कवि के झोपड़े को बनाकर नहीं देती। तुम्हें इसी समय महल छोड़ना होगा।''

रानी सन्न रह गई। वह काँप गई और राजा के पैरों में गिरकर गलती की माफी माँगने लगी। उसे रह–रहकर अपनी सखी योगिता की बातें याद आने लगीं, जिसने झोपड़ी जलाने को मना किया था। पर राजा ने रानी की एक बात भी नहीं सुनी। वह फिर बोला– ''तुम तब तक इन महलों में नहीं रह सकती, जब तक कि कवि को झोपड़ी बनाकर नहीं दे देती। झोपड़ी बनाकर देने के बाद तुम फिर रानी हो जाओगी।''

रानी महलों से बाहर चली गई। वह दिन भर जंगलों से लकड़ी काटती और फिर शहर में बेच आती। उसकी आमदनी से अपना भरण–पोषण करती और झोपड़ी बनाने के लिए पैसे बचाती। कुछ ही महिनों में रानी ने झोपड़ी बनवाने लायक पैसे जोड़ लिए।

उसने एक सुन्दर झोपड़ी बनवाई और फिर राजा को सूचना दी कि उस कवि की कुटी तैयार है। राजा सूचना पाकर खुद अपने स्वयंसेवकों के साथ झोपड़ी देखने आया। झोपड़ी देखकर राजा प्रसन्नता से भर उठा। वह रानी से बोला– ''रानी, झोपड़ी तो वाकई सुन्दर है।'' फिर उसने अपने सेवकों को आदेश दिया कि झोपड़ी को आग लगा दी जाए। रानी सन्न रह गई। राजा के पैरों में गिरकर गिड़गिड़ाने लगी– ''नाथ, इसे नष्ट न कराइए। यह मेरे कठिन परिश्रम की कमाई है। मुझ पर रहम कीजिए।'' राजा मुस्कुराकर बोला– ''रानी, अब तुम समझ गई कि मेहनत से बनाई गई चीज के नष्ट होने पर दिल पर क्या गुजरती है। उस कवि पर भी ऐसी ही गुजरी थी।''

कवि की आँखें आँसुओं से भर गई। वह काफी देर से यह दृश्य देख रहा था। राजा के पास आकर प्रणाम करके बोला– ''राजन्! मुझे सच्चा न्याय मिल गया। हम लेखक–कवि इस तरह का ही राज–काज और शासन चाहते हैं। हमारा साहित्य आप जैसे लोगों के लिए ही है। सच! आप दोनों बहुत बड़े हैं। मुझे दुःख है कि रानी जी को मेरे कारण इतना कष्ट उठाना पड़ा। पर यह कष्ट नहीं, यह एक उदाहरण है न्याय के लिए। यह एक सबक है। भविष्य के लिए एक सही रास्ता है। इस घटना का उल्लेख मैं अपने साहित्य में जरूर करूँगा।'' राजा–रानी वापस खुशी से रहने लगे और वह कवि थे हिन्दी साहित्य के प्रकांड विद्वान पंडित श्याम सुन्दर दास।

पूरन सरमा
जयपुर (राजस्थान)

आओ जानें... क्रिसमस

ईसा मसीह की शिक्षाएँ

ईसा मसीह ने अपने अनुयायियों को प्रेम और क्षमा की शिक्षा दी। जब उन्हें सूली पर चढ़ाया गया तो उन्होंने कहा– "प्रभु, इन्हें माफ कर देना क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।" ईसा मसीह ने लालच और ईर्ष्या से बचने का उपदेश दिया। उनका कहना था कि किसी से बदला मत लो, भले ही तुम्हें खुद दुःख और तकलीफ सहन करना पड़े।

क्रिसमस का त्योहार

- ईसाई धर्म के सबसे बड़े त्योहारों में से एक है क्रिसमस।
- ईसाई धर्म के संस्थापक प्रभु ईसा मसीह के जन्मदिन के रूप में यह त्योहार हर साल 25 दिसंबर को मनाया जाता है।
- क्रिसमस शब्द दो शब्दों 'क्राइस्ट' और 'मास' से मिलकर बना है जिसका मतलब है ईसा मसीह का पवित्र महीना।
- क्रिसमस के दिन बच्चों के लिए सान्ता क्लॉज का आना सबसे ज्यादा दिलचस्प होता है।
- सान्ता क्लॉज लाल–सफ़ेद कपड़ों में बच्चों के लिए उपहार और चॉकलेट लाता है।
- क्रिसमस के दिन लोग अपने घरों को सजाते हैं।
- चर्च यानी गिरजाघरों में क्रिसमस बेल की गूँज, लाइटिंग और तरह–तरह की सजावट आकर्षण का केंद्र होती है।
- इस दिन क्रिसमस ट्री लगाया जाता है और इसे रंग–बिरंगी रोशनी और चमकीले आभूषणों से सजाया जाता है।
- क्रिसमस के दिन चर्चों में प्रार्थना सभा होती है और मसीह गीतों की अंताक्षरी खेली जाती है।
- क्रिसमस के दिन केक बनाया जाता है और लोग एक–दूसरे को उपहार देते हैं।

कौन हैं सान्ता क्लॉज

सान्ता क्लॉज का नाम संत निकोलस से बना माना जाता है। संत निकोलस जरूरतमन्द और बीमार लोगों की मदद करने के लिए घूमा करते थे। सान्ता क्लॉज लोककथाओं में प्रचलित सफेद दाढ़ी वाले एक खुशमिजाज इनसान हैं जिनके मन में दया का भाव कूट–कूटकर भरा है। कई पश्चिमी संस्कृतियों में ऐसा माना जाता है कि सान्ता क्रिसमस की पूर्व संध्या, यानी 24 दिसम्बर की शाम या देर रात अच्छे बच्चों के घरों में आकर उन्हें उपहार देता है।

सान्ता क्लॉज की लोककथा

एक लोककथा जो गीत "सान्ता क्लॉज इज कमिंग टू टाउन" में प्रचलित है, के अनुसार वह पूरी दुनिया के बच्चों की एक सूची बनाता है, उन्हें उनके व्यवहार ("शरारती" और "अच्छे") के अनुसार अलग–अलग श्रेणियों में रखता है और क्रिसमस की पूर्व संध्या वाली रात, दुनिया के सभी अच्छे लड़कों और लड़कियों को खिलौने, केन्डी और अन्य उपहार देता है और कभी–कभी शरारती बच्चों को कोयला देता है।

डॉ. अलका जैन 'आराधना'
जयपुर (राजस्थान)

ऐसा क्रिसमस का त्योहार

खुशियाँ ही खुशियाँ लाता है
हर्षोल्लास का यह त्योहार
ईसा का यह जन्मदिवस है
पाते बच्चे नया उपहार।

घर में क्रिसमस ट्री सजता है
रंग-बिरंगी झालर वाला
खूब रोशनी होती उसमें
पहने चॉकलेट की माला।

हर साल पच्चीस दिसम्बर को
क्रिसमस का उत्सव यह आता
इसे 'बड़ा दिन' भी कहते हैं
बच्चों को छुट्टी है लाता।

नकली सान्ता क्लॉज घूमते
आकर्षक पोशाक पहन कर
बच्चों से हैं हाथ मिलाते
देते चॉकलेट खुश होकर।

अपने संग लेकर आता है
नये साल का नया सवेरा
हो जाता उत्साह दोगुना
लाता संकल्पों का घेरा।

श्यामपलट पांडेय
अहमदाबाद (गुजरात)

परख

आपकी प्रिय बाल पत्रिका 'बच्चों का देश' ने हाल ही में अपने प्रकाशन की रजत जयंती मनाई है। इस ऐतिहासिक अवसर पर अणुविभा मुख्यालय 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' राजसमंद में आयोजित 'बाल साहित्य समागम' एक यादगार आयोजन बन गया। इस मौके पर प्रकाशित पत्रिका के रजत जयंती विशेषांक को भी व्यापक सराहना प्राप्त हो रही है। स्नेही पाठकों व रचनाकारों के विशेषांक व समागम के संदर्भ में प्राप्त कुछ विचार यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। यह क्रम आगामी अंकों में भी जारी रहेगा।

यह तीन दिनों का प्रवास हर दृष्टि से उपलब्धिपूर्ण रहा। आपकी और समस्त सदस्यों की कर्मनिष्ठा, कार्यकुशलता और कार्य तत्परता ने बहुत ही प्रभावित किया। कुछ दिनों तक कलयुग कहीं भी हमारे पास नहीं था। सभी सत्रों का सुव्यवस्थित और शालीनता के साथ प्रस्तुत होना और सबको सुअवसर मिलना, यही प्रबंधन की कुशलता है। अनेक बार नाथद्वारा जाते समय यहाँ से होकर गई, पर हर शहर का भी अपना बुलावा होता है, जो इस बार पूर्ण हो सका। पत्रिका का यह सफर अभी बहुत दूर तक जाएगा। हम सभी आपके साथ हैं। यह साधना अनवरत चलती रहे। बच्चों का देश फलता–फूलता रहे, बच्चों पर ही देश का भविष्य निर्भर है। चुनौतियों को पार करते हुए, हम बच्चों से जुड़े रहेंगे।

डॉ. शुभदा पांडेय
आगरा (उत्तर प्रदेश)

'बच्चों का देश' पत्रिका की रजत जयंती के उपलक्ष्य में अणुव्रत संस्थान के तीन दिवसीय बाल–साहित्यकार सम्मेलन के दौरान संस्थान के सभी सदस्यों का अनिर्वचनीय स्नेह तथा अनमोल साहित्य संपदा के साथ–साथ राजसमंद की बेहिसाब खूबसूरती समेट लाया मेरा मोबाइल। मुझे इस आयोजन का हिस्सा बनाकर आप लोगों ने पहले से अधिक समृद्ध किया है, उसके लिए आप लोगों के प्रति आत्मिक आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे प्रकृति से अनन्य प्यार है और मुझे आप लोगों ने अद्‌भुत प्रकृति के बीच रहने का जो अवसर दिया, उसके लिए आभार व्यक्त करने के लिए तो कोई शब्द ही नहीं है मेरे पास। बस संस्था के निरन्तर फलने–फूलने की मंगलकामनाएँ करता हूँ। जीवन में इतना सुव्यवस्थित, सफल और सार्थक आयोजन नहीं देखा। आयोजक मंडल का श्रम अनुकरणीय है। वहाँ से मैं अपार ऊर्जा लेकर आया और बहुत कुछ सीखा।

कैलाश त्रिपाठी
अजीतमल (उत्तर प्रदेश)

'बच्चों का देश' पत्रिका के प्रकाशन की रजत जयंती, चिल्ड्रन'स पीस पैलेस का सुरम्य वातावरण, राजसमंद झील का मनमोहक नजारा, अणुविभा एवं बच्चों का देश परिवार के सभी सदस्यों से प्राप्त स्नेह व सत्कार, सभी सत्रों का सुनियोजित प्रबंध, बाल साहित्य संवाद तथा योग सत्र के माध्यम से नगर दर्शन का

अवसर, भिक्षु निलयम में रात्रि विश्राम, सुस्वादु अल्पाहार एवं भोजन, अविनाश जी नाहर, संचय जी जैन, प्रकाश जी तातेड़ व चंद्रशेखर जी देराश्री का अप्रतिम स्नेह एवं समारोह के प्रति समर्पण, दो दर्जन पुराने मित्रों से मुलाकात एवं इससे तीन गुना नए मित्रों से परिचय, आभासी संसार में संवादरत रह चुके वरिष्ठ लोगों से प्रत्यक्ष मुलाकात, तड़के भोर से लेकर देर रात तक निरन्तर चलने वाले सत्र, प्रत्येक सत्र में सार्थक चर्चा एवं विमर्श, हर सत्र में सहभागियों की शत प्रतिशत उपस्थिति एवं सकारात्मक सहभागिता, चिल्ड्रन'स पीस पैलेस में भ्रमण एवं अवलोकन, अणुविभा परिसर से प्रतिक्षण निसृत होती सकारात्मक ऊर्जा का आभास, विदुषी साध्वियों का आशीष, किसी भी प्रकार की त्रुटि से रहित एक सम्पूर्ण आयोजन, बाल साहित्य समागम – जैसे किसी स्वप्न ने धरती पर आकर आकार ग्रहण किया हो।

यशपाल शर्मा 'यशस्वी'
पहुंना (राजस्थान)

बाल साहित्य को समृद्ध करती बच्चों की प्रिय राष्ट्रीय बाल पत्रिका 'बच्चों का देश' प्रकाशन ने अगस्त माह में रजत जयंती समारोह राजसमंद राजस्थान में आयोजित किया था। उस तीन दिवसीय आयोजन में सहभागिता करके अणुव्रत आंदोलन को भी समझा, बाल विकास के अन्यान्य प्रकल्प भी देखे।

दो दिन पूर्व 'बच्चों का देश' का 256 पृष्ठीय रजत जयंती अंक प्राप्त हुआ। यह अंक सामग्री की अपनी विविधता के कारण संग्रहणीय तो बन ही गया है, साथ ही भविष्य में बाल साहित्य के शोधों में संदर्भ ग्रंथ के रूप में प्रयोग किया जायेगा, ऐसा विश्वास है। इस अंक में मेरा भी एक लेख प्रकाशित हुआ है, स्वाभाविक खुशी है।

पत्रिका है बच्चों का देश

मनभावन है, सबसे न्यारी,
बच्चों को है, अतिशय प्यारी,
सरल, सहज भाषा से करती-
राज दिलों पर राजदुलारी,
पत्रिका है-बच्चों का देश!

बाल कहानी सबको भाती,
कविताएँ सबको ललचातीं,
रंग जमाती बाल-पहेली,
बाल-नाटिकाएँ इठलातीं,
पत्रिका है-बच्चों का देश!

रजत-जयंती गई मनाई,
हमने भी हाजिरी लगाई,
आवभगत इस वीर-धरा की-
सबके मन को अतिशय भाई,
हमारा इसको शुभ संदेश-
खुशबुएँ फैलें देश-विदेश!
पत्रिका है-बच्चों का देश!!

– डॉ. आर पी सारस्वत
सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

पत्रिका के संपादक संचय जैन जी, सह संपादक प्रकाश तातेड़ जी और पूरी टीम तथा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रमोद दीक्षित मलय
बांदा (उत्तर प्रदेश)

रखो साफ-सफाई

मम्मी ने यह बात बताई
आसपास तुम रखो सफाई।
यहाँ–वहाँ मत फेंको कचरा
घर को रखो साफ–सुथरा।

जहाँ न होती साफ–सफाई
समझो सौ बीमारी आई।
गन्दगी को दूर भगाओ
सब रोगों से मुक्ति पाओ।

स्वच्छता की आदत अपना लो
कूड़ा कूड़ेदान में डालो।
स्वच्छ रहेगा जब परिवेश
सुन्दर होगा अपना देश।

नमिता वैश्य
गोंडा (उत्तर प्रदेश)

प्रेरक वचन

देश तभी ताकत हासिल कर सकता है और खुद को विकसित कर सकता है जब भारत के विभिन्न समुदायों के लोग आपसी सद्भाव के साथ रहें।

❖

निर्भयता ही स्वतन्त्रता का एकमात्र मार्ग है। निडर बनो और न्याय के लिए लड़ो।

❖

हम धर्म को चरित्र का पक्का आधार और मानव सुख का सच्चा स्रोत मानते हैं।

❖

भारत की एकता का मुख्य आधार है– एक संस्कृति जिसका उत्साह कभी नहीं टूटा। यही इसकी विशेषता है।

पंडित मदन मोहन मालवीय

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

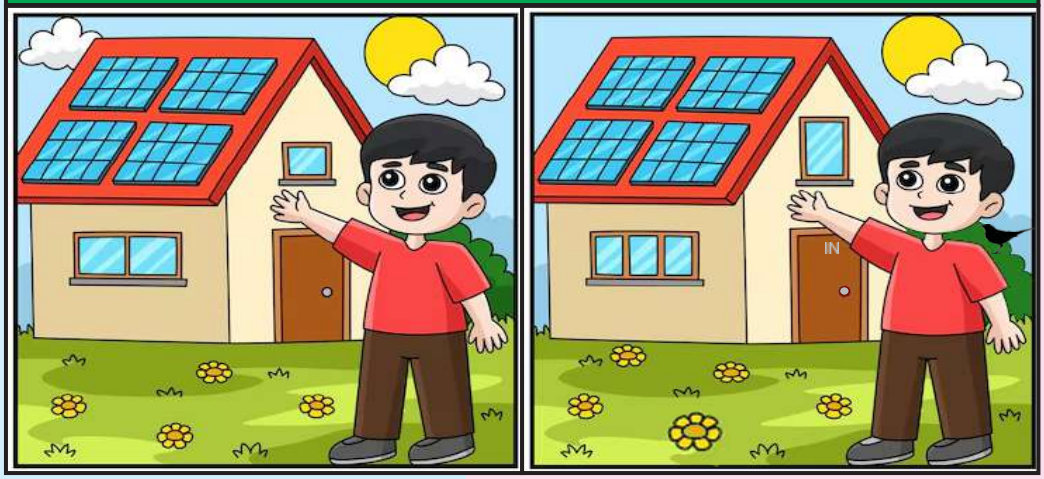

मुस्कान की बोहनी

आँगन का दृश्य बेहद उत्साहित और हर्षित करने वाला था। जिसे देखकर मैं अचम्भित एवं प्रसन्न खड़ा था। सामने की बाल–क्रीड़ा कमाल की थी मनोरंजक भी और कौतूहल से भरी हुई! दीवार से सटकर, एक कुर्सी पर मुस्कान बैठी हुई थी, उसके कानों में झूठ–मूठ का डॉक्टरी आला लगा हुआ था और आले का अगला हिस्सा सामने की स्टूल पर बैठी अपनी प्रिय सहेली रीतू के सीने पर रख उसकी धड़कनें और साँसों की गति की जाँच कर रही थी। फिर उसने रीतू से कहा– "तुम अपना मुँह खोलो, रीतू!" रीतू ने मुँह खोल दिया।

"मुँह से बदबू आ रही है, दाँत भी गन्दे हो गये हैं, तुम ब्रश नहीं करती हो क्या?" उसने पूछा। "ब्रश हमारे घर में नहीं है, हम दाँतुन और दन्तमंजन से दाँत साफ करते हैं।" रीतू ने बताया। "दाँतुन ठीक से नहीं करती हो, तभी दाँत इतने गन्दे हैं, बाबू जी से कहो, पेस्ट और ब्रश–जीभी ला देंगे।" "बाबू जी घर में नहीं हैं, बाहर काम करने गये हैं।" रीतू ने कहा। "जब आयेंगे तब मँगा लेना और दाँत–मुँह ठीक से साफ करना, ठीक है।" "ठीक है, डॉक्टरनी जी।"

मैं अभी–अभी ऑफिस से घर लौटा था। आँगन में कदम रखने ही वाला था कि तभी यह अद्भुत नजारा देख दीवार से सटकर खड़ा हो गया ताकि उन दोनों की नजर मुझ पर न पड़े और उनके डॉक्टर–मरीज के खेल में कोई बाधा उत्पन्न न हो।

मुस्कान कह रही थी– "तुम हर दिन नहाती भी नहीं हो क्या, रीतू? कपड़े भी तुम्हारे कितने गन्दे हैं। इस तरह तो तुम बीमार पड़ जाओगी।"

"माँ रोज–रोज नहाने नहीं देती है। कोयला लाने कोलियारी चली जाती है। घर में पानी भी नहीं रहता है। मैं छोटी हूँ, कुएँ से पानी नहीं ला सकती हूँ। कैसे नहाऊँगी? कपड़े भी इसीलिए गन्दे हैं।" रीतू ने अपनी मजबूरी बताई। "ठीक है, माँ से पानी लाकर घर में रखने को कहना। तुम खुद नहाना और खुद कपड़े धोना, ठीक है।" "ठीक है।"

तोंई यहाँ काहे खड़ा हअ? (तुम यहाँ क्यों खड़े हो?)" पीछे से पत्नी आकर बोली। यह बात उन दोनों ने सुन ली। "अरे बाबा आ गया.. बाबा आ गया।" कह मुस्कान मेरी ओर दौड़ पड़ी। "बाबा, मेरा बिस्कुट ला दिए?"

"बिलकुल ला दिए है, बेग में है।" उसे गोद में उठाते हुए मैंने प्यार से पूछा– "पहले तुम ये बताओ, अभी जो तुम दोनों खेल रही थी, वह कहाँ से सीखा?" "हम

तो ऐसे ही खेलते हैं बाबा।" मुस्कान मुस्कुरा उठी। अकस्मात मुझे चन्द्रगुप्त मौर्य की बाल कहानी याद आ गई थी। वह भी बचपन में अपने बाल सखाओं के साथ इसी तरह राजा–प्रजा का नाटक खेला करते थे। तभी मैंने मुस्कान से पूछा था– "मुस्कान, तुम पढ़ लिखकर क्या बनोगी?"

मुस्कान बेग से बिस्कुट निकाल रही थी। मेरी बात ठीक से नहीं सुन पाई। पूछ बैठी– "क्या कहा बाबा?" "तुम पढ़ लिखकर क्या बनना चाहोगी?"

"मैं.. मैं पढ़ लिखकर डॉक्टर बनूँगी बाबा।" और हँसते हुए वह गोद से उतर गई थी। "ठीक है, बोहनी दादी के घुटने का इलाज करना।" "ये बोहनी क्या होती है बाबा?" "शुरुआत!" "ठीक है, मगर मैं तो दाँत की डॉक्टर बनूँगी। तब मैं दादी के घुटने कैसे ठीक कर सकूँगी, बाबा।" कहते हुए रीतू के साथ वह बाहर भाग गई।

श्यामल बिहारी महतो
बोकारो (झारखंड)

आओ पढ़ें : नई किताबें

सरस बाल कविताओं की इस पुस्तक में विविध विषयों की रोचक कविताएँ हैं। कविताओं का कथ्य सरल, सुबोध है। प्रस्तुति व शिल्प प्रभावी है। रंगीन आवरण व चित्रयुक्त पुस्तक का मुद्रण सुन्दर है। अनेक कविताएँ बालमन को छूती हैं।

पुस्तक : सूरज का घोड़ा
लेखक : राजेन्द्र निशेश
मूल्य : 220 रुपए **पृष्ठ :** 87
संस्करण : 2023
प्रकाशक : वनिका प्रकाशन, बिजनौर (उत्तर प्रदेश)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

			6			2		
	8				7			6
6		2				5		
	7			6				2
5			9		1			
		9		2			4	
		5				6		3
2			4		6		7	
		6	1					9

उत्तर इसी अंक में

सेवा का मेवा

व्हाट्सएप कहानी

कल बाजार में फल खरीदने गया, तो देखा कि एक फल की रेहड़ी की छत से एक छोटा–सा बोर्ड लटक रहा था, उस पर मोटे अक्षरों से लिखा हुआ था– "घर में कोई नहीं है, मेरी बूढ़ी माँ बीमार है, मुझे थोड़ी–थोड़ी देर में उन्हें खाना, दवा और टॉयलेट कराने के लिए घर जाना पड़ता है, अगर आपको जल्दी है तो अपनी मर्जी से फल तौल लें, रेट साथ में लिखे हैं। पैसे कोने पर गत्ते के नीचे रख दें, धन्यवाद!''

मैंने इधर–उधर देखा, पास पड़े तराजू में दो किलो सेव तोले, दर्जन भर केले लिए, बैग में डाले, प्राइस लिस्ट से कीमत देखी, पैसे निकाल कर गत्ते को उठाया, वहाँ सौ–पचास और दस–दस के नोट पड़े थे, मैंने भी पैसे उसमें रख कर उसे ढक दिया। बैग उठाया और अपने फ्लैट पर आ गया।

रात को खाना खाने के बाद मैं उधर से निकला, तो देखा एक कमजोर–सा आदमी, दाढ़ी आधी काली आधी सफेद, मैले से कुर्ते पजामे में रेहड़ी को धक्का लगाकर बस जाने ही वाला था, वो मुझे देखकर मुस्कुराया और बोला– "साहब! फल तो खत्म हो गए।" उसका नाम पूछा तो बोला– "सीताराम"। फिर हम सामने वाले ढाबे पर बैठ गए।

चाय आई, वो कहने लगा– "पिछले तीन साल से मेरी माता बिस्तर पर हैं। अब तो लकवा भी हो गया है। घर में सिर्फ मैं हूँ और मेरी माँ। माँ की देखभाल करने वाला कोई नहीं है, इसलिए मुझे ही हर वक्त माँ का ख्याल रखना पड़ता है। एक दिन मैंने माँ के पाँव दबाते हुए कहा– माँ! तेरी सेवा करने को तो बड़ा जी चाहता है पर जेब खाली है और तू मुझे कमरे से बाहर निकलने नहीं देती, कहती है, तू जाता है तो जी घबराने लगता है, तू ही बता मैं क्या करूँ? न ही मेरे पास कोई जमा पूँजी है।''

ये सुनकर माँ ने हाँफते–काँपते उठने की कोशिश की। अपने कमजोर हाथों को ऊपर उठाया, मन ही मन भगवान की स्तुति की। फिर बोली– "तू रेहड़ी वहीं छोड़ आया कर, हमारी किस्मत का हमें जो कुछ भी है, इस कमरे में बैठकर मिलेगा।"

मैंने कहा– "माँ! क्या बात करती हो, वहाँ छोड़ आऊँगा तो कोई चोर उचक्का सब कुछ ले जाएगा, आजकल कौन लिहाज करता है? और बिना मालिक के कौन फल खरीदने आएगा?" कहने लगी– "तू भगवान का नाम लेने के बाद रेहड़ी को फलों से भरकर छोड़ कर आजा बस, ज्यादा बक–बक नहीं कर, शाम को खाली रेहड़ी ले आया कर, अगर तेरा रुपया गया तो मुझे बोलियो!" ढाई साल हो गए हैं भाईसाहब सुबह रेहड़ी लगा आता हूँ, शाम को ले जाता हूँ। लोग पैसे रख जाते हैं, फल ले जाते हैं, एक धेला भी ऊपर नीचे नहीं होता।

परसों एक बच्ची पुलाव बना कर रख गई, साथ में एक पर्ची भी थी– "अम्मा के लिए!" एक डॉक्टर अपना कार्ड छोड़ गए। पीछे लिखा था– ''माँ की तबियत नाजुक हो तो मुझे कॉल कर लेना, मैं आ जाऊँगा। कोई खजूर रख जाता है, रोजाना कुछ न कुछ मेरे हक के साथ मौजूद होता है। न माँ हिलने देती है, न मेरे भगवान कुछ कमी रहने देते हैं। माँ कहती है, तेरे फल मेरा भगवान अपने फरिश्तों से बिकवा देता है।''

नौकरी पुलिस की पहचान शिक्षिका की

प्यारे बच्चो! आज हम आपको दो ऐसी महिला पुलिसकर्मियों के बारे में बताने जा रहे हैं जो बेहद दयालु और परोपकारी स्वभाव की हैं। ये दोनों पुलिसकर्मी गरीब बच्चों को मुफ्त में शिक्षा दे रही हैं।

सविता कोहली, उत्तराखंड

उत्तराखंड पुलिस में कांस्टेबल की ड्यूटी पर तैनात सविता कोहली नेकदिल और परोपकारी महिला हैं। ये साक्षात ममता की मूर्ति हैं। यहाँ जनपद चंपावत में बनबसा थाने में ट्रैफिक पुलिस विभाग में कर्मरत सविता अपनी कठिन ड्यूटी के बाद कचरा बीनने वाले बच्चों को प्रतिदिन 2 घंटे मुफ्त में पढ़ाती हैं। सविता ने ड्यूटी के दौरान छोटे–छोटे बच्चों को कचरे से थैलियाँ, बोतलें व अन्य सामान बीनता देखा तो उन्हें काफी दुःख हुआ। उन्हें लगा कि इन नन्हें हाथों में कचरे के थैले नहीं बल्कि किताब–कॉपियों से भरे बस्ते होने चाहिए। अब वह इन बच्चों को रोज पढ़ाती हैं। इस वक्त उनकी विशेष कक्षा में 50 से ज्यादा छात्र–छात्राएँ ज्ञान अर्जन कर रहे हैं।

शुरू–शुरू में तो इन बच्चों के माता–पिता इन्हें पढ़ने भेजने के लिए राजी नहीं होते थे फिर उन्होंने अभिभावकों को शिक्षा का महत्त्व समझाया और आश्वासन दिया कि इसके लिए उन्हें एक भी पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा। तब वे अपने बच्चों को पढ़ने के लिए भेजने पर राजी हुए।

गुड्डन चौधरी, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश पुलिस में कार्यरत गुड्डन चौधरी अपने क्षेत्र में 'पुलिस वाली मैडम' के नाम से विख्यात हैं। ये सड़क के किनारे गरीब बच्चों के लिए स्कूल चलाती हैं। गुड्डन खुर्जा नगर के थाना देहात में तैनात हैं। यहाँ वे देवी मन्दिर मार्ग पर गरीब और पिछड़े वर्ग के बच्चों को मुफ्त में शिक्षा दे रही हैं। इनमें से ज्यादातर बच्चे बंजारा समाज के हैं। बच्चों को पढ़ने के लिए आवश्यक सामग्री भी वे अपने पैसों से ही लाकर देती हैं। गुड्डन अपने वेतन का 30% हिस्सा स्टेशनरी पर ही खर्च कर देती हैं। उनका मानना है कि आज के बच्चे ही कल के भारत का उज्ज्वल भविष्य हैं। इसलिए वे उनकी पढ़ाई–लिखाई के प्रति बेहद गम्भीर हैं।

उनके इस अभियान की पुलिस विभाग ही नहीं स्थानीय लोग भी खूब सराहना करते हैं। स्थानीय लोग उन्हें बहुत आदर से देखते हैं। इस समय वे करीब 40 बच्चों को पढ़ा रही हैं। जरूरत पड़ने पर वे स्कूल की प्रिंसिपल से मिलकर बच्चों के दाखिले में भी मदद करती हैं।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

कहाँ गया धन ?

बात बहुत पुरानी है। किसी राज्य में एक राजा राज करता था। वह बहुत दयालु और शान्त स्वभाव का था। सदैव अपनी प्रजा के हित के बारे में सोचता रहता था। वह चाहता था कि उसकी प्रजा सुखी और सम्पन्न रहे। उसके राज्य में कोई भी व्यक्ति गरीब न हो। लेकिन उसे अपनी इस योजना को साकार करने का कोई उपाय सूझ नहीं रहा था।

एक दिन उसके मन में विचार आया– "क्यों न सभी धनवान लोगों से धन छीनकर गरीबों में वितरित कर दिया जाय। इससे उसकी प्रजा सुखी और समृद्ध हो जाएगी। इससे उसके राज्य में कोई भी व्यक्ति गरीब नहीं रहेगा।" यही सोचकर उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया– "जाओ और राज्य में जितने भी धनवान लोग दिखाई दें, उनका धन छीनकर उसे राज्य के गरीबों में वितरित कर दो।"

सैनिक आदेश का पालन करते हुए धनवान लोगों से धन छीनकर गरीबों में वितरित करने लगे। इस प्रकार प्रतिदिन कितने ही धनवान लोगों से धन छीना जाने लगा। फिर छीना हुआ धन गरीबों में बाँट दिया जाता। सैनिक प्रतिदिन राजा को यह समाचार देते। यह सुनकर राजा बहुत प्रसन्न होता और सोचता– "अब कुछ ही दिनों में उसके राज्य से गरीबी दूर हो जाएगी और सभी लोग धनवान हो जाएँगे।"

लेकिन इसका परिणाम उल्टा हुआ। राज्य के लोग गरीब और फटेहाल होने लगे। राज्य में सुख–समृद्धि का कहीं कोई नामो निशान नहीं रहा। राज्य के लोग पहले से भी अधिक कंगाल हो गये। राज्य का खजाना भी खाली होने लगा।

यह देखकर राजा और अधिक दुःखी और चिन्तित हो गया। वह सोचने लगा– "ऐसा कैसे हो गया ? उसकी यह योजना कैसे विफल हो गयी? धनवानों से छीना गया धन आखिर गया कहाँ?" उसकी समझ में यह बात नहीं आ रही थी। यही सोचकर वह दुःखी रहने लगा।

राजा का मन्त्री काफी समझदार और विद्वान था। एक दिन मन्त्री ने राजा को चिन्तित देखकर बोला– "महाराज! आप कुछ दिनों से बहुत परेशान और चिन्तित नजर आ रहे हैं। आखिर आपके दुःख का क्या कारण है?" राजा काफी दुःखी स्वर में बोला– "मन्त्री जी, मैं अपनी प्रजा को सुखी और समृद्ध करना चाहता था। मैं चाहता था कि राज्य में कोई भी व्यक्ति गरीब नहीं रहे। इसलिए मैंने सारे धनवान लोगों से धन छीन कर गरीबों में वितरित करवा दिया। इसकी जानकारी आपको भी होगी। पर मेरी यह योजना असफल हो गयी और प्रजा और अधिक गरीब और फटेहाल हो गयी। राज्य का खजाना भी खाली होता जा रहा है। लोग प्रसन्न होने के बजाय अधिक दुःखी रहने लगे हैं। मेरी समझ में यह बात नहीं आ रही

कि आखिर बाँटा गया धन कहाँ गया?"

मन्त्री बोला– "महाराज, यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं अपने विचार रखूँ।" राजा ने आज्ञा दे दी। मन्त्री ने कहा– "महाराज, आपकी यह योजना इसलिए असफल हो गयी कि आपके आदेश से जिन धनवानों का धन छीन लिया गया, उन्होंने सोचा– अधिक धन कमाने से क्या फायदा? जबकि राजा उनके मेहनत से कमाये गये धन को छीन लेता है। इससे तो अच्छा यही है कि जितनी आवश्यकता हो, उतना ही धन कमाना चाहिए। इस प्रकार उन्होंने अधिक मेहनत करना छोड़ दिया। इससे उनके व्यवसाय काफी मन्द पड़ गये। धन का आवागमन कम हो गया। इसके विपरीत गरीबों को बिना कुछ काम किये ही धन मिलने लगा। इससे वे और अधिक आलसी हो गये। यही प्रमुख कारण है कि राज्य के लोग फटेहाल और कंगाल होते जा रहे हैं। राज्य का खजाना भी खाली होता जा रहा है।"

मन्त्री की बात सुनकर राजा की आँखें खुल गयी और अपनी गलती का अहसास हो गया। राजा गहरे विचार में पड़ गया और बोला– "राज्य की गरीबी दूर करने का आखिर सही उपाय क्या है?" मन्त्री काफी सोच–विचार के बाद बोला– "महाराज, राज्य की गरीबी दूर करने का उपाय मेरी समझ में यह आता है कि धनवानों से धन न छीनकर, उनसे टैक्स लिया जाय। इस टैक्स को गरीबों में वितरित न कर उससे उद्योग–धंधे व शिक्षण संस्थान खोले जायें। ऐसा करने से राज्य के प्रत्येक नागरिक को काम–धंधा मिल जायेगा और लोग शिक्षित भी हो जायेंगे। राज्य से गरीबी और अशिक्षा अपने आप दूर हो जायेगी। लोग सुखी और समृद्ध हो जाएँगे।"

राजा को मन्त्री की बात समझ में आ गयी। कुछ ही समय में राज्य से गरीबी दूर हो गयी और सभी लोग समृद्ध और खुशहाल हो गये।

पुष्पेश कुमार पुष्प
बाढ़ (बिहार)

बूझो तो जानें

1
जब भी उसको काटते,
नहीं निकलता खून।
सबके तन का अंग है,
नाम बताओ मून ।।

2
बिना तेल बाती जले,
करता है उजियार।
कहें उसे सब देवता,
सारा ही संसार ।।

3
गीले पर रँग है हरा,
सूखे पर रंग लाल।
पर उसको खाते नहीं,
वह है चीज कमाल ।।

4
लगे बनाने में समय,
भैया सालों साल।
टूटे पल भर में सखे,
कैसी बात कमाल ।।

5
कच्चा हो या पका हो,
बाहर हरियल रंग।
अन्दर से वह लाल है,
खाएँ नमक के संग ।।

प्रेमसिंह राजावत 'प्रेम', आगरा (उत्तर प्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

दस सवाल दस जवाब

(1) इन भारतीय खिलाड़ियों के नाम बताइये।

(2) किस भारतीय खिलाड़ी ने ओलिम्पिक में सबसे पहले व्यक्तिगत मेडल जीता?

(3) भारतीय फुटबाल टीम के कैप्टन कौन हैं?

(4) अन्तरराष्ट्रीय पैराओलिम्पिक कमेटी का मुख्यालय कहाँ है?

(5) किन खेलों की एक टीम में खिलाड़ियों की संख्या 11 होती है?

(6) भूटान का राष्ट्रीय खेल कौनसा है?

(7) किस देश को शतरंज खेल का जन्मदाता कहा जाता है?

(8) मिल्खा सिंह को किस नाम से जाना जाता है?

(9) नीरज चोपड़ा किस खेल से सम्बन्धित हैं?

(10) भारत में अर्जुन पुरस्कार कब प्रारम्भ हुआ?

(उत्तर इसी अंक में)

बताओ तो जानें

सर्दी के दिनों में ये पक्षी श्रीलंका में तथा गर्मी के दिनों में हिमालय में रहते हैं। आप इनके नाम बताइये।

चाँद मोहम्मद घोसी
मेड़ता सिटी (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

पालक खाएँ सेहत बनाएँ

भोजन हमारी मूल आवश्यकता है। भोजन तभी पूर्ण होता है जबकि उसके साथ हरी पत्तेदार सब्जी भी हो। जैसे मैथी, मूली, बथुआ आदि। लेकिन जो बात पालक में हैं, वह अन्य सब्जियों में कहाँ! पालक न केवल रुचिकर और स्वादिष्ट होता है अपितु सेहतमन्द भी।

पालक का इस्तेमाल आमतौर पर सब्जी के रूप में होता है, जैसे पालक पनीर, आलू पालक। इसी प्रकार, दालों में मूँग की दाल में पालक बहुत स्वादिष्ट लगता है। पालक के पकौड़े, पुड़ी या भजिए तो बेहद स्वादिष्ट लगते हैं। खाते ही चले जाएँ। इसके अलावा, पालक की सेव भी बनती है। पालक का गर्मागर्म सूप और जूस भी लोगों को रुचिकर लगता है यानी पालक से तरह–तरह के व्यंजन बनते हैं।

पालक महज एक सब्जी ही नहीं है अपितु पोषक तत्वों और गुणों का खजाना भी है। इसके पत्तों में छिपे हैं सेहत के राज। इसमें सभी आवश्यक तत्वों का समावेश है। प्रोटीन, विटामिन, खनिज, लवण, कार्बोहाइड्रेट, वसा और रेशा सब कुछ इसमें मौजूद हैं। ये सभी मिलकर पालक का पोषण मूल्य बढ़ाते हैं। पालक सुपाच्य होता है। यह स्वयं तो जल्दी पचता ही है, भोजन के पाचन में भी मददगार होता है। इसमें रेशे की प्रधानता होती है जो कि पेट को साफ करते हैं। कब्ज की शिकायत नहीं रहती।

पालक में विटामिन ए अच्छी मात्रा में होता है। इसके सेवन से हमारी नेत्र ज्योति अच्छी बनी रहती है। इसके अलावा, त्वचा की कोमलता बनाए रखता है। हड्डियों की मजबूती

के लिए पालक अवश्य खाना चाहिए क्योंकि इसमें कैल्शियम और फास्फोरस दोनों होते हैं। पालक में आयरन यानी लौह तत्व काफी अधिक होता है। यह हमारे शरीर में रक्त निर्माण और रक्त की शुद्धि के लिए जरूरी है।

पालक स्मरणशक्ति भी बढ़ाता है। विद्यार्थियों के लिए यह विशेष तौर पर लाभदायक है। जो लोग मानसिक श्रम करते हैं, उन्हें भी किसी न किसी रूप में इसका सेवन करना चाहिए। पालक में आयोडीन होता है। इसके सेवन से घेंघा रोग नहीं होता। पालक के रस में बराबर मात्रा में टमाटर का रस मिलाकर सेवन करने से यकृत सम्बन्धी समस्याओं से निजात मिलती है। पालक के रस में गाजर और टमाटर का रस मिलाकर पीना चाहिए। इससे मुहाँसे, झुर्रियाँ तथा आँखों के नीचे बनने वाले काले धब्बे दूर होते हैं।

किरण बाला गुप्ता
मन्दसौर (मध्य प्रदेश)

रेड बैंच

खिड़कियों में आकर चिड़ियाँ चीं चीं का शोर मचा रही थी। मम्मी ने आवाज लगाई। "निहान! बच्चे, जरा चिड़िया को दाना डाल दो, यह भूखी हैं इसलिए इतना शोर मचा रही हैं।" निहान ने डाइनिंग टेबल पर रखे डिब्बे में से थोड़े से बाजरे के दाने लेकर बाहर खिड़की के पास फैला दिए। दाना डालते ही चिड़ियों का शोर और भी बढ़ गया। ऐसा लग रहा था, सभी अपने तमाम साथियों को आवाज लगाकर कह रही हों "आओ, नाश्ता तैयार हो गया है।" सभी बैठकर आराम से दाना चुगने लगीं। उन्हें देखकर निहान को अपने वे पुराने सारे दोस्त याद आ गए– टीनू, रानू, बिट्टू, शानू और उसका मन एकदम उदास हो गया।

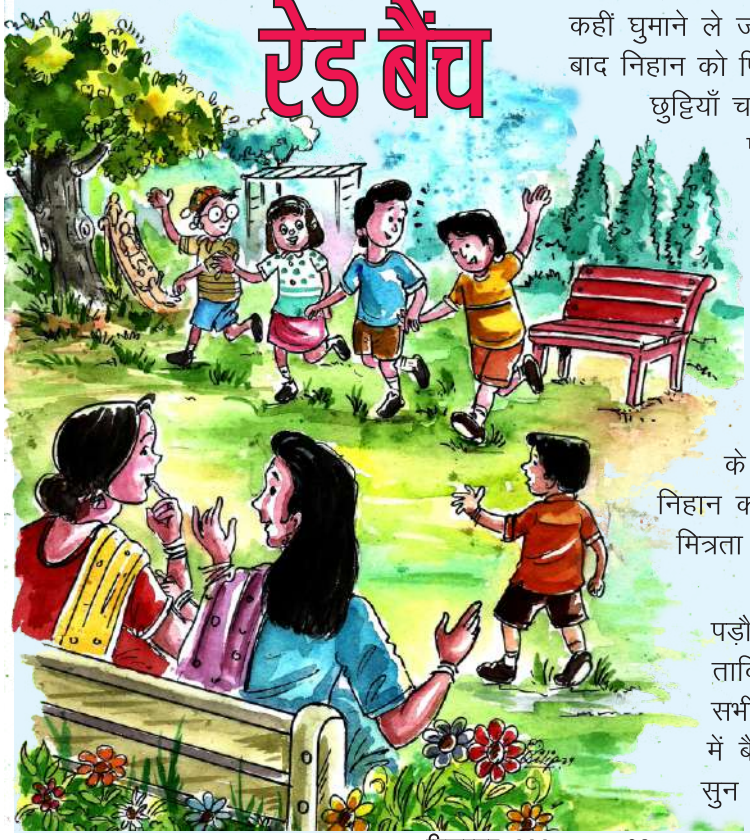

बात दरअसल यह है कि निहान के पापा नए–नए ट्रांसफर होकर जबलपुर से इंदौर आए हैं। निहान की मम्मी अपना नया घर जमाने में व्यस्त हो गईं। साथ ही अड़ोस–पड़ोस की महिलाओं से थोड़ा परिचय कर लिया। पापा भी अपने नए दफ्तर के काम में व्यस्त हो गए। लेकिन नई जगह, नए लोगों के बीच निहान स्वयं को बड़ा ही अकेला महसूस कर रहा था। उसे अपने दोस्तों की याद सता रही थी। चिड़ियों को देखकर उसके मन में विचार आया कि वह भी अपने दोस्तों के साथ ऐसी ही मस्ती करता था। मगर अब, अब तो वह अकेला ही रह गया। काश! चिड़िया की तरह मेरे भी पंख होते तो मैं भी उड़कर अपने दोस्तों के पास पहुँच जाता।

मम्मी–पापा निहान की परेशानी समझ रहे थे, इसलिए वे उसे रोज शाम को कहीं न कहीं घुमाने ले जाते। लेकिन वहाँ से आने के बाद निहान को फिर अकेलापन खलने लगता। छुट्टियाँ चलने से अभी उसका स्कूल में एडमिशन भी नहीं हुआ था। वरना वहाँ जाकर उसे कुछ मित्र ही मिल जाते। वह कुछ संकोची स्वभाव का था। मम्मी ने कई बार कहा– "चलो निहाल! शाम को कॉलोनी में घूम कर आते हैं। हो सकता है तुम्हें अपनी उम्र के कुछ साथी मिल जाएँ।" मगर निहान को खुद आगे होकर किसी से मित्रता करने में संकोच होता था।

आज मम्मी ने कॉलोनी के पड़ौसियों को चाय पर बुलाया ताकि सबसे पहचान हो सके। सभी महिलाएँ आई। अपने कमरे में बैठे–बैठे निहान सब की बातें सुन रहा था और कुछ खेल रहा

था। मम्मी ने कहा कि आओ सभी आंटी से मिल लो, उन्हें नमस्ते कर लो, लेकिन उसका वही संकोच बाधक बना। लेकिन उसे अच्छा लगा कि चलो, मम्मी को तो उनकी दोस्त मिल गई। बस, मैं ही अकेला रह गया।

तब मम्मी ने ही सामने वाली चित्रा आंटी से कहा– "हमारा निहान अकेला पड़ गया है, उसके सारे दोस्त वहीं छूट गए, इसलिए वह उदास रहता है।" निहान के कानों में जैसे ही अपना टॉपिक पड़ा उसके कान चौक्कने हो, गौर से सुनने लगे। तभी चित्रा आंटी बोलीं– "अरे! उसमें उदास होने की क्या बात है, ट्रांसफर में ऐसा तो होता ही है। फिर जीवन में हमेशा वही दोस्त तो नहीं रहते। नए दोस्त बनते रहते हैं।"

"सच बात है, बल्कि इसे ऐसा सोचना चाहिए कि पुराने दोस्तों के साथ–साथ नए दोस्त और मिल गए।" इस बार पड़ौस वाली सुनंदा आंटी की आवाज थी। "निहान से कहो, यहाँ कॉलोनी के बच्चों के साथ दोस्ती कर ले, यहाँ भी बहुत बच्चे हैं।" चित्रा आंटी ने कहा। "वही तो, बहुत संकोची है हमारा निहान, कहती हूँ मगर जाता ही नहीं किसी के पास।" "कोई बात नहीं उससे कहिए पार्क के बीचों बीच जो रेड बैंच है, कल शाम को जाकर उस पर बैठ जाए।"

"रेड बैंच!!" मम्मी ने चौंकते हुए कहा। "जी, पार्क के बीचो–बीच एक बैंच है, उसे हमने रेड कलर किया हुआ है।" "लेकिन उस बैंच पर बैठने से क्या होगा?" मम्मी ने फिर पूछा। "आप उससे कहिए तो... वह एक चमत्कारिक बैंच है। निहान की समस्या का समाधान करेगी।" चित्रा आंटी बोलीं। "ठीक है, मैं उसे बताऊँगी।" आंटियों के जाने के बाद मम्मी ने निहान से कहा– "निहान! कल शाम जाकर तुम उस रेड बैंच पर बैठ जाना।" "लेकिन मम्मी उस रेड बैंच पर बैठने से क्या होगा?" "यह तो बच्चे, मुझे भी नहीं पता मगर चित्रा आंटी ने कहा है तो कुछ सोच कर ही कहा होगा।"

दूसरे दिन निहान मम्मी के साथ पार्क में गया, उन्होंने देखा पार्क में बहुत सारे बच्चे खेल रहे हैं, इसका मतलब कॉलोनी में कई बच्चे हैं। लेकिन वो रेड बैंच! खोजते हुए निहान उत्साहित हो बोला– "मम्मी! वो रही रेड बैंच।" उन्होंने देखा पार्क के बीचों–बीच वाकई में एक रेड बैंच रखी है। "मगर, मम्मी यह बैंच तो खाली है।" "कोई बात नहीं बेटा, जैसा आंटी ने कहा है वैसा करो।" निहान जाकर उस बैंच पर बैठ गया। अभी उसे बैठे 5 मिनट ही हुए थे कि बच्चों का समूह उसके पास आ गया और उसका हाथ पकड़कर अपने साथ खेलने ले गया। देखते ही देखते निहान उन बच्चों में ऐसा घुल–मिल गया मानो पहले से जानता हो। उसके कई दोस्त बन गए, अब वह अकेला नहीं था।

लेकिन उसके मन में अब भी यही जिज्ञासा थी कि आखिर रेड बैंच का क्या सस्पेंस है? तभी चित्रा आंटी ने आकर बताया– "आज हर व्यक्ति को किसी से पहली बार मिलने में संकोच होता है। इसलिए हमने पार्क में विशेष रूप से यह रेड बैंच रखी है। यह इस उद्देश्य से है कि बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री, पुरुष जो भी अपने आप को अकेला महसूस करें, वह आकर इस बेंच पर बैठ जाएँ। यह संकेत है कि ये व्यक्ति अकेला है, इसे दोस्त की आवश्यकता है। देखते ही देखते उनके समूह के लोग उनके पास आ जाएँगे और उन्हें अपने साथ ले जाएँगे। इससे उनका अकेलापन दूर हो जाएगा।''

"वाओ आंटी! यह तो बहुत अच्छा आइडिया है।" निहान बहुत खुश था। "तो क्या कहते हो निहान, है न चमत्कारिक रेड बैंच।" "वाकई आंटी, मैं अपने सब मित्रों को भी बताऊँगा कि वे भी अपनी कॉलोनी के पार्क में ऐसी एक रेड बैंच रखें ताकि कोई अकेला न रहे।" "अवश्य बताना बेटा।" चित्रा आंटी मुस्कुराते हुए बोलीं।

डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'
भोपाल (मध्य प्रदेश)

पढ़ो और जीतो

यहाँ दिये दस प्रश्नों के उत्तर इसी अंक की सामग्री पर आधारित हैं। आप पत्रिका पढ़ें और उनके सही उत्तर खोजकर एक कागज पर लिखें। अपना नाम, कक्षा, शहर व मोबाइल नं. भी इस पत्र पर लिखना है । उसका फोटो हमें व्हाट्सएप नं. 9351552651 पर **दिनांक 31 दिसम्बर** तक भेजें। सर्वश्रेष्ठ उत्तर पर पुरस्कार दिया जाएगा।

1. हम्पी के स्मारक किस राज्य में स्थित हैं?
2. रेड बैंच को चमत्कारी क्यों कहा गया?
3. रतन टाटा को अगस्त 2024 में कौनसा पुरस्कार, किस संस्था द्वारा दिया गया?
4. जॉन के दादाजी ने किन दो बुराइयों से बचने के लिए कहा?
5. कवि की झोपड़ी किसने और क्यों जला दी थी?
6. सुमित की मम्मी ने उसे टेढ़ी–मेढ़ी रोटियां क्यों परोसी?
7. दादी ने साइमन का माथा क्यों चूम लिया?
8. सास–बहू के मंदिर का नाम किस शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है?
9. मुस्कान बड़ी हो कर क्या बनना चाहती है?
10. अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के अंतर्गत कौन–कौनसी प्रतियोगिताएं आयोजित होती हैं?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) ध्यान चन्द (ब) पी.वी.सिन्धु (स) विराट कोहली (द) साईना नेहवाल (2) के.डी. जाधव ने 1952 में कुश्ती में कांस्य पदक जीता (3) सुनील छेत्री (4) बॉन (जर्मनी) (5) फुटबॉल, हॉकी, क्रिकेट (6) तीरंदाजी (7) भारत (8) फ्लाईंग सिख (9) भाला फेंक (10) 1961 में

अन्तर ढूँढ़िए

(1) आसमान में बादल गायब (2) वेन्टिलेशन का आकार बड़ा (3) झोपड़ी में तीन खिड़कियाँ (4) एक फूल गायब (5) फूल का आकार बड़ा (6) एक पांव में दूसरे रंग का मोजा (7) झाड़ी में चिड़िया अतिरिक्त (8)दरवाजे पर IN लिखा हुआ

दिमागी कसरत

(1) कहानी, पहाड़ (2) चेहरा, महल (3) साक्षर, राक्षस (4) जिज्ञासा, विज्ञान (5) गौरव, सूरज (6) आदित्य, मंदिर

बताओ तो जानें

(अ) शाह बुलबुल (ब) सुनहरा पीलक (स) नौरंग पक्षी

बूझो तो जानें

(1) नाखून (2) सूर्य (3) मेहँदी (4) भरोसा (5) तरबूज

वर्ग पहेली

1 इं	2 दि	रा	3 गां	4 धी	■	5 र	6 वि	
7 सा	ल	■	8 धा	र	णा	■	चा	
नि	■	9 म	री	ज	■	10 ला	र	
11 य	12 श	द	■	■	13 स	■	क	
14 त	क	■	15 का	16 लि	दा	17 स	■	
■	18 र	19 न	■	20 पि	च	का	21 री	
■	22 कं	ग	न	■	23 र	म	ता	
24 म	द	द	■	25 ऋ	ण	■	■	

सुडोकू

9	5	7	6	1	3	2	8	4
4	8	3	2	5	7	1	9	6
6	1	2	8	4	9	5	3	7
1	7	8	3	6	4	9	5	2
5	2	4	9	7	1	3	6	8
3	6	9	5	2	8	7	4	1
8	4	5	7	9	2	6	1	3
2	9	1	4	3	6	8	7	5
7	3	6	1	8	5	4	2	9

दिव्यम बोथरा, कक्षा-4, लिलुआ, कोलकाता

आरोही माहेश्वरी, कक्षा 6, चित्तौड़गढ़

काव्या नारायण, कक्षा 6, भीलवाड़ा

नमन मोदी, कक्षा 1, बीकानेर

गुलामी से आजादी तक

आओ सुनाएँ आपको वीरों की एक गाथा,
यह है हमारे महान देश के संघर्ष की कथा।

दूर देश से आए वो बनकर व्यापारी,
छल–कपट से लूट ली हमारी धन दौलत सारी।
सही समझे दोस्त! थे वे अंग्रेज,
पहुँचाई उन्होंने हमारे आत्म सम्मान को ठेस।

धीरे–धीरे शुरू हुआ उनका जंगल राज
उनके सामने झुक गया हर राजा का ताज
हुआ भारत माँ पर जुल्म और अत्याचार।
किया हर भारतीय को अपमानित और लाचार।

शुरू किये हमने अभियान, आन्दोलन और हड़ताल
बीते कई साल किन्तु न बदला हमारा बुरा हाल।
जागी सबके मन में क्रान्ति की ज्वलंत लहर,
तब हुई आजादी की एक नई सहर।

सन् 1947 में हुआ आजादी का सपना साकार,
खुले नवीन भारत के लिए विकास के द्वार।

अर्हम बोथरा, कक्षा-9, लिलुआ, कोलकाता(प.बंगाल)

आप भी अपनी कलम और कूँची का कमाल हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

मैरी क्रिसमस

पूजा माल, आरती माल

रोनिका, कल्पना, संजना, शिवानी

कृष्णा माल, नेहा माल

अर्चना खराड़ी, अर्चना ताबियार, आयुषी नाई

नैना पारगी, सुमन दायमा

प्रांजलि, आशा

भारती, अर्चना डामोर

सामग्री सौजन्य :
आई. आई. एफ. एल. फाउंडेशन
द्वारा
गांवों में संचालित
सखियों की बाड़ी केंद्र,
गढ़ी (बांसवाड़ा)

भव्या, शिवानी, नैना, सुमन, लतिका

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

रिंजी ने सबसे ऊँची 14 चोटियों को फतह किया

नेपाल के नीमा रिंजी शेरपा 18 साल की उम्र में दुनिया के 14 सबसे ऊँची पर्वतों पर चढ़ने वाले सबसे कम उम्र के पर्वतारोही बन गए हैं। उनकी यह यात्रा 9 अक्टूबर को पर्वतारोही साथी पासंग नूरबू शेरपा के साथ नेपाल की 8027 मीटर ऊँची चोटी शिसापांमा के शिखर पर पहुँचने पर पूरी हुई। दो सालों में रिंजी ने हिमालय की 5 चोटियों पर चढ़ाई की है।

1001 बेटियों को लिया गोद

गुजरात के बालाजी हनुमान मंदिर ट्रस्ट ने 1001 बेटियों को गोद लिया है। ये बेटियाँ आसपास के 50 गाँवों गरीब परिवारों की हैं। मंदिर के ट्रस्टी मनीष त्रिवेदी ने बताया कि 1001 बेटियों की शिक्षा-दीक्षा से लेकर उनके लालन-पालन का खर्च ट्रस्ट उठाएगा। उन्होंने बताया कि एक बेटी शिक्षित होगी तो इससे दो परिवार शिक्षित होंगे। धनतेरस को आयोजित एक कार्यक्रम में इन बेटियों के माता-पिता भी आमंत्रित किए गए थे। यह भी पता चला है कि इनमें लगभग 250 मुस्लिम परिवारों की बेटियाँ भी हैं। यह धार्मिक एकता व सद्भाव का अच्छा उदाहरण है।

भरतनाट्यम की 52 मुद्राओं का रिकॉर्ड

केरल में 3 साल की ध्वनि मुकेश का नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया है। नन्ही ध्वनि भरतनाट्यम की 52 मुद्राएँ बना सकती है। ध्वनि की माँ प्रशीता दूसरे बच्चों को नृत्य सिखाती हैं। इस दौरान उन्हें देख-देखकर ही ध्वनि भी इन मुद्राओं को करने लगी।

दुनिया का पहला रोबोट-एआई म्यूजियम

दक्षिण कोरिया की राजधानी सोल में दुनिया का पहला रोबोट और एआई म्यूजियम खोला गया है। चार मंजिला म्यूजियम में ग्राउंड फ्लोर पर सेल्फ रोबोट मेहमानों का स्वागत करते हैं। एग्जीबिशन फ्लोर पर सेल्फ ड्राईविंग कार, डॉग-राइडिंग रोबोट्स, चलने वाले और ह्यूमेनाइड रोबोट्स प्रदर्शित किए गए हैं।

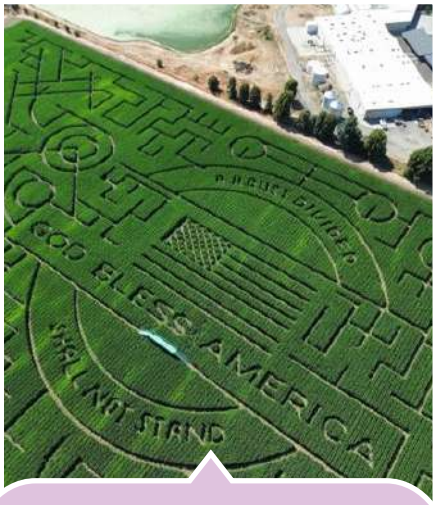

सबसे बड़ी भूलभुलैया

केलिफोर्निया के डिक्सन में स्थित विश्व प्रसिद्ध भूलभुलैया दुनिया की सबसे बड़ी मकई भूलभुलैया है। यह 42 एकड़ में फैली हुई है। मकई के इस विशाल खेत में अमेरिकी झंडे के साथ 'गॉड ब्लेस अमेरिका' जैसे शब्दों को उकेरा गया है, जो देश भक्ति की भावना को जगाते हैं। यहाँ आने वाले लोग मकई के ऊँचे-ऊँचे पौधे के बीच खो जाते हैं और रास्ता खोजने का रोमांचकारी अनुभव लेते हैं।

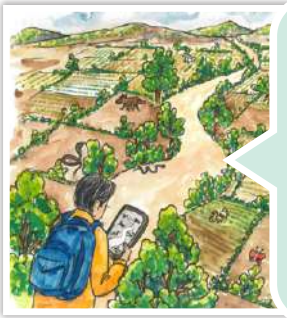

जंगली जानवरों की पहचान का सिस्टम

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में रहने वाले दुपेश मांजरे कक्षा 10 ने अनूठा डिटेक्शन सिस्टम बनाया है, जिससे जंगल में कहाँ जानवरों की चहल कदमी है, यह पता चल सकेगा। इस सिस्टम से जंगली जानवरों के हमलों से बचाव की सम्भावना काफी बढ़ सकती है। इसमें मोबाइल पर अलर्ट भी आ जाएगा।

Science of Living

Good Habits

जीवन विज्ञान
स्वस्थ समाज की संरचना

What is good

Getting up early in the morning is a good habit.

It is beneficial for health.

Make it a habit.

Getting up late in the morning is a bad habit.

It is not good for health.

Avoid it.

What do you like to become

Like to be dirty Like to be Clean

By remaining clean, we protect ourselves from diseases.

Everyone likes us, when we are neat and tidy.

Which quality do you like?

This ? or This ?

Every one likes the person who is polite.

No one likes the rude person.

Polite or Rude

विश्व विरासत स्थल-12

हम्पी के स्मारक

प्यारे बच्चो! जब आप अपने घर और स्कूल से बाहर निकलकर भारत के विराट फलक पर अपनी विरासत को देखने की कोशिश करते हैं तो आपको उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक अनेक ऐतिहासिक स्थल, गुफाएँ, किले, सांस्कृतिक स्थल, अभयारण्य और प्राचीन अवशेष मिलेंगे, जो आपको आश्चर्यजनक लगेंगे। आज हम आपको कर्नाटक राज्य में तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित ऐसे ही एक विरासत स्थल की सैर पर लिए चलते हैं।

दक्षिण के महान शासक कृष्णदेव राय के विजयनगर साम्राज्य के अवशेषों को हम्पी के स्मारक कहा जाता है। इस विशाल साम्राज्य की नींव हरिहर और बुक्का नामक भाइयों द्वारा रखी गई थी। विश्व पर्यटन की इस पूँजी को यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में सन् 1986 में शामिल किया गया है। कोलिन मैकेंजी ने सन् 1800 में हम्पी के खंडहरों की खोज की थी। यह स्थान वर्तमान में विजयनगर जनपद में स्थित है। ये अवशेष विजयनगर साम्राज्य की समृद्धि, कला प्रियता और महानता के जीवित प्रमाण भी हैं।

विजयनगर साम्राज्य की ऐतिहासिक स्थिति रामायण और पुराणों में भी मिलती है। पुराणों में यहाँ पर पम्पा देवी के मन्दिर का जिक्र मिलता है। यह धार्मिक आस्था का भी केन्द्र रहा है। यहाँ पर भगवान शिव को समर्पित विरुपाक्ष का मन्दिर सबके आकर्षण का केन्द्र रहा है। यहाँ पर कुल 20 मन्दिर हैं। पत्थर के पहियों पर बना बड़ा–सा मन्दिर जो भगवान विष्णु के वाहन गरूड़ जी को समर्पित है। कृष्ण मन्दिर परिसर, नरसिंह, गणेश, हेमकूट मन्दिर, अच्युराय मन्दिर, पट्टाभिराम मन्दिर परिसर आदि प्रमुख हैं।

यहाँ के राजा–महाराजाओं को अनाज, सोने और रुपयों से तोला जाता था और उसे गरीब लोगों में बाँट दिया जाता था। हम्पी के इतिहास में ऐसे अनेक रोचक प्रसंग मिलते हैं। यहाँ पर घूमने का सबसे बेहतर समय अक्टूबर से फरवरी का माना जाता है। भारत सरकार ने 50 रुपये के नये नोट पर हम्पी के पत्थर रथ की तस्वीर अंकित की है।

नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
नई दिल्ली

खुशहाली

चित्रकथा-

मेरे राज्य में सब खुशहाल हैं।दया,दान,धर्म सब है यहां...

मंत्री राजा से सहमत नहीं था बोला-

महाराज,हमारे पड़ौसी मित्र राज्य में भी बहुत खुशहाली है ,मैं चाहता हूं आप वहां के राजा से मिलें..

पड़ौसी राजा के यहां-

..हमारे महाराज शूरसेन के राज्य में सब ओर खुशहाली है दया,दान,धर्म सब है।

..हमारे राजा की ओर से प्रतिदिन पांच हजार भिखारियों को खाना खिलाया जाता है, खूब दान-पुण्य होता है...

माफ करना भाई, मुझे तो सिर्फ यही पूछना है जिस राज्य में पांच हजार भिखारी हैं वहां सब ओर खुशहाली कैसे हुई?

संकेत गोस्वामी, जयपुर

-वेणु वरियाथ

किड्स
कोर्नर

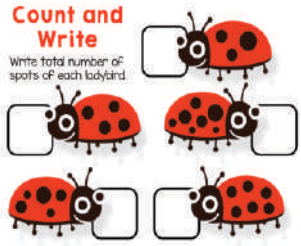
Count and Write
Write total number of spots of each ladybird.

Find the way
Help the aeroplane to reach the airport
Help the ship to reach the ocean.
AIRPORT

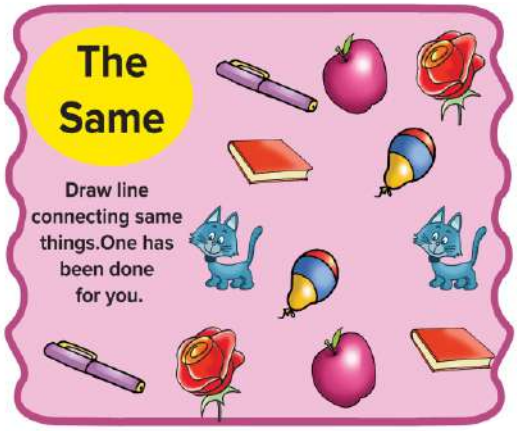
The Same
Draw line connecting same things.One has been done for you.

Come, Let's Draw
See how easy it is to draw this clown.Now try to draw one yourslef, step by step, on a piece of paper.

जन्मदिन की बधाई
06 दिसम्बर
चेष्टा राठी
निंबाहेड़ा (राजस्थान)
09 दिसम्बर
अदिति चौखड़ा
अहमदाबाद (गुजरात)
13 दिसम्बर
कीर्ति गोयल
सिलीगुड़ी (पश्चिमी बंगाल)
22 दिसम्बर
तान्या कौशिक
बीकानेर (राजस्थान)

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

AkashGanga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

पृष्ठ 02 का शेष...

विजेता सूची

गायन (समूह)

स्तर-1 कक्षा 5-8 प्रथम – स्वरा यादव, माधवी जायसवाल, पार्थ घाडगे, आराध्या चौरसिया, विहान राम, आर्य गुरुकुल नंदिवली, कल्याण (महाराष्ट्र) **द्वितीय**–नव्या श्रीवास, प्राची, भव्या अत्री, आरती राणा, डॉल्सी मेहता, प्लैटिनम वैली इंटरनेशनल स्कूल, गाजियाबाद (उ.प्र.) **तृतीय**– मीत गोजारे, इशिता पाटिल, विधि पाटिल, समर पाटिल, दर्शिल चौधरी, अर्वाचिन इंडिया स्कूल फॉर होलिस्टिक लर्निंग स्कूल, बुरहानपुर (म.प्र.)

स्तर-2 कक्षा 9-12 प्रथम – सोनल, अंजली दीक्षित, गुंजन सजवान, तन्वी ढोंडियाल, इशिका, प्लैटिनम वैली इंटरनेशनल स्कूल, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) **द्वितीय** – प्रथम गोयल, गीत पालीवाल, प्रिया मीणा, सृष्टि डावर, सेंट्रल पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, उदयपुर (राजस्थान) **तृतीय**– निष्ठा मोगरी, सेंट्रल पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, उदयपुर। लव्या जैन, सृष्टि साहू , समीक्षा तिवारी, विरम जैन, जयवर्धन तुरकाने अंबुजा विद्या पीठ, रावन (छत्तीसगढ़)

कविता

स्तर-1 कक्षा 5-8 प्रथम – द्विवेदी आर्यन, सी.एस विद्या भारती हिंदी विद्यालय, सूरत (गुजरात) **द्वितीय** – भाग्यश्री देवड़ा, आदित्य बिड़ला सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नागदा (म.प्र.) **तृतीय**– नव्याश्री डी एस, सेंट मैरी इंटरनेशनल स्कूल, चिकमंगलूर (कर्नाटक), आरना बधवार, प्लैटिनम वैली इंटरनेशनल स्कूल, गाजियाबाद (उ.प्र)

स्तर- 2 कक्षा 9-12 प्रथम – अजयसिंह शेखावत, आदित्य बिड़ला सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नागदा(मध्य प्रदेश) **द्वितीय** – मुस्कान कुमारी, नगांव इंगलिश अकेडमी, नगांव (असम) **तृतीय**– गायत्री भाटिया, स्मार्ट स्टडी इंटरनेशनल स्कूल, नाथद्वारा (राजस्थान)

निबन्ध

स्तर-1 कक्षा 5-8 प्रथम – शिवम शुक्ला, अंबुजा विद्या पीठ, रावन (छत्तीसगढ़) **द्वितीय** – नव्या चांडक, अम्बुजा विद्या निकेतन, उप्परवाही, चंद्रपुर (महाराष्ट्र) **तृतीय**– शुभा एच.एस, श्री साई एंजल्स स्कूल (कर्नाटक)

स्तर-2 कक्षा 9-12 प्रथम – ऐशम्या यू, श्री साई एंजल्स पीयू कॉलेज (कर्नाटक) **द्वितीय** – वंशिका तिवारी, श्री सनातन धर्म पब्लिक स्कूल, कौशलपुरी कानपुर (उत्तर प्रदेश) **तृतीय**– श्रिया मिश्रा, गुरुकुल इंग्लिश मीडियम हायर सेकेंडरी स्कूल बलौदा बाजार (छत्तीसगढ़)

चित्रकला

स्तर-1 कक्षा 5-8 प्रथम – गुप्ता आयुष, बांगुर नगर विद्या भवन और जूनियर कॉलेज, गोरेगांव पश्चिम (महाराष्ट्र) **द्वितीय**–याशिका बागवानी, अंबुजा विद्यापीठ, रावन (छत्तीसगढ़) **तृतीय**– श्रेया मैती, जोहरीमल हाई स्कूल (ओड़िशा)

स्तर-2 कक्षा 9-12 प्रथम – वैभव भारद्वाज, श्री सनातन धर्म पब्लिक स्कूल, कौशलपुरी कानपुर(उत्तर प्रदेश) **द्वितीय** – स्वामी टी., श्री रवि वर्मा आर्ट्स इंस्टीट्यूट मैसूर (कर्नाटक) **तृतीय**– बाबूलाल डी. मोतीलाल फार्मा सनातन धर्म हायर सेकेंडरी स्कूल, चेन्नई (तमिलनाडु)

भाषण

स्तर-1 कक्षा 5-8 प्रथम–प्रजापति प्रज्ञा, गुरूनानक हायर सेकेंडरी स्कूल, मुम्बई (महाराष्ट्र) **द्वितीय**–गर्वित रोशन, जे एस एस श्री मंजूनाथेश्वर सेंट्रल स्कूल, विद्यागिरी, धारवाड़ (कर्नाटक) **तृतीय**– भट्ट रूचा, उपासना लायन्स इंगलिश मीडियम स्कूल, वापी (गुजरात)

स्तर-2 कक्षा 9-12 प्रथम – तपस्या पांडे, सेंट मैरी इंटरनेशनल स्कूल, कल्याण (महाराष्ट्र) **द्वितीय** – चाहत जैन, आदित्य बिरला सीनियर सेकंडरी स्कूल नागदा (मध्य प्रदेश) **तृतीय**– मुग्धा बाजपेयी, श्री सनातन धर्म पब्लिक स्कूल कोशलपुरी कानपुर (उत्तर प्रदेश)

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

"यात्रा करने और नए देशों व विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों को देखने के मेरे जुनून ने मुझे विचारों और स्थितियों को उच्च दृष्टिकोण से देखने में मदद की है। किसी विचार का विस्तार करना हर योग्य शिक्षक का कर्तव्य है। सर्वप्रथम एक शिक्षाविद् होने के नाते मैं जीवन भर विचारों का विस्तार करता रहा हूँ। मेरी साहित्य लेखन की अपनी शैली है। यह भाषा और अभिव्यक्ति के प्रेम का परिणाम नहीं है, बल्कि विचार का विस्तार करने की मेरी रुचि के कारण है।"

काका कालेलकर

जन्म : 01 दिसम्बर 1885
निधन : 21 अगस्त 1981

काका कालेलकर के नाम से प्रसिद्ध दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर जाने-माने शिक्षाशास्त्री, समाज सुधारक, पत्रकार और स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थे। महात्मा गाँधी के आप निकटतम सहयोगी थे। अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। काका कालेलकर उच्चकोटि के विचारक और लेखक थे। गुजराती, हिन्दी, मराठी और अंग्रेजी भाषा में आपने अनेक ग्रंथों की रचना की। आजादी के आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान और राष्टभाषा हिन्दी की सेवा के लिए आपको सदैव याद किया जाएगा।